ओ३म्

गर्भाधान विधि

जिस में

धातु और उस के गुण, स्त्री-प्रसंग कोक शास्त्र
स्त्री पुरुष मीमांसा, सीमाबद्ध सन्तानोत्पत्ति की
विधि-उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये
उत्तम एवं सरल उपाय तथा गर्भधारण
गर्भ परीक्षा प्रसव-विधि प्रसूत की
रक्षा प्रसूत और बालकके रोगों की
परीक्षा और सब प्रकार की
चिकित्सा आदि का वर्णन
किया गया है ।

जिस पर—

गुण ग्राहकता की दृष्टि से वै. वा. श्री. राजा नरायणसिंह
साहब ने २५) रु० पारितोषिक दिये ।

लेखक वा प्रकाशक—

चिम्मनलाल वैश्य, तिलहर

सोलहवीं वार ११००] १९२८ ई० [मूल्य ।) आने

गृहस्थियों से नम्र-निवेदन।

ओं-पयसा शुक्रममृतं जनित्रं सुरयामूत्राज्जनयन्त रेतः। अपामतिं दुर्मतिं बाधमानाऊवध्यं वातं सब्वं तदारात्॥ यजु० अ० १९। ८४।

जो मनुष्य दुर्गुण और दुष्ट संगों को छोड़ कर व्यभिचार से दूर रहते हुये वीर्य्य को बढ़ाके सन्तानों को उत्पन्न करते हैं वे अपने कुल की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले होते हैं।

प्यारे पाठक एवं पाठकाओ! उपरोक्त वेदमन्त्र आप को स्पष्ट बतला रहाहै कि "गृहस्थियों" का मुख्य धर्म "उत्तम सन्तान" उत्पन्न करनाहै क्योंकि उत्तम सन्तानोंसे कुलकी शोभा होती है और फिर ऐसे अनेक कुलों से नगर की प्रतिष्ठा एवं प्रतिष्ठित नगर राष्ट्र की कीर्ति के बढाने वाले होते हैं वही उत्तम सन्तानें देश एवं जाति को गुलामी की जंजीर से मुक्त कर स्वतंत्रता के आनन्द को चखाती हैं वही मर्यादा पूर्वक कार्य करके देश को स्वर्गधाम बना देती हैं। उत्तम सन्तान ही स्वदेश प्रेम और स्वदेश भक्ति में चूर होकर उसकी उन्नति के लिये आत्म समर्पण तक कर देती हैं। वही सत्य व्रत का पालन कर देश में शान्ति का राज्य स्थापित कर वीर गति को प्राप्त करती हैं-सौन्दर्य की लहर उन के तेज और प्रकाश

वैद्यक विद्या के अनुसार कार्य कर-उत्तम, सुयोग्य सन्तानें उत्पन्न कर सकते हैं, परन्तु शोक तो इस बात का है कि वर्तमान समय में उठने, बैठने, चलने, फिरने, स्नान, ध्यान करने, व्यायाम, आसन, खाने, पीने, सभाओं में बोलने, खेती, चाकरी और धन कमाने के लिये नाना प्रकार की शिल्प विद्या इत्यादि बातों को माता, पिता, आचार्य, मित्र, सम्बन्धी आदि सिखलाते और पढ़ाते हैं, परन्तु गुप्त इन्द्रियों के जिन के द्वारा सन्तान उत्पन्न करते है उस की विधि को समझाने बुझाने की ओर कोई तनक भी ध्यान नहीं देते जिस के कारण उनसे जो सन्तानें उत्पन्न होती हैं वह कुरूप, निबल,निर्बुद्धि,निरउत्साही, आलसी, रोगी, काम, क्रोध, लोभ में फँसने, समय पर चूकने वाली, साहस हीन, अल्पायु में मरने वाली, विचार रहित पाखण्डी, धर्म विरोधी, देश द्रोही, माता, पिता, आचार्य के विरुद्ध काम करने वाली, स्मृति रहित, डरपोक, निलज्ज, हिंसक, घर में शेर और मैदान से भागने वाली आदि अनेक अपगुणों से युक्त होती हैं तथा उनके माता पिता के शरीरों में नाना प्रकार के भयङ्कर रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिस के कारण वह थोड़े ही दिनों में सन्तान उत्पन्न करने के योग्य नहीं रहते और अनेकान क्लेशों में फंस जीवन यात्रा को शीघ्र समाप्त कर सुरपुर चले जाते हैं और उनकी सन्तानें भारत के प्राचीन गौरव और वैभव को खो, अपार दुःखों में फंस मस्तराम की भांति उन को सहन कर हाड़ों की माला बन जाते हैं फिर वह उठाने से भी नहीं उठते और समझाने पर भी नहीं समझते।

फिर भला उपरोक्त अपगुणों से युक्त सन्तान से देश को क्या उपकार हो सकता है और माता पिता आदि को क्या सुख मिल सकता है क्या ऐसी सन्तानों से भारत का उद्धार हो सकता है? क्या ऐसी सन्तानें भारत को गुलामी की जंजीर से छुड़ा कर स्वतंत्र कर सकती हैं? क्या ऐसी औलादों से देश प्रख्यात हो सकता है? क्या यह शूर कहलाने के योग्य है? कदापि नहीं, कदापि नहीं, कदापि नहीं। इस लिये यदि आप को भारत देश को उठाना है और उसके गौरवको देखना है और संसार में भारत माता का नाम प्रसिद्ध करना है, देश में प्रेम की वायु को बहाना है, धर्म पर कुर्बान होना है, तो वेदों और वैद्यक की आज्ञानुसार सन्तानों को उत्पन्न करने की रीति को युवक युवतियों को समझाइये, बतलाइये जिस को जान वह श्रेष्ठ सन्तानें उत्पन्न करें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये मैंने सन् १८८८ ई० में इस पुस्तक को लिख कर आप की भेंट किया जिसका आपने जो मान्य किया उसका विशेष धन्यवाद देता हुआ आज विशेष संशोधन के पश्चात् इस पुस्तक का सोलहवां एडीशन आप की सेवा में समर्पित कर आशा रखता हूं कि पूर्व से अधिक इस बार अपनाने की कृपा कर, मेरे परिश्रम को सफल कर, साहित्य की वृद्धि कर, यश के भागी बनियेगा।

स्थान
तिलहर
ज़िला
शाहजहांपुर
१-१-२८

आपका पुराना,
साहित्य सेवकः—
चिम्मनलाल वैश्य,
कासगंज
ज़िला एटा,

ओ३म्

गर्भाधान-विधि

वीर्य-रज की उत्पत्ति, उसके रहने का स्थान और गुण

प्रति दिन जो भोजन-मनुष्य, स्त्री करते हैं वह पक्काशय में पहुंच जठराग्नी द्वारा आमाशय अर्थात् नाभि और वक्षस्थल के बीच में जाकर पचता है उससे दो वस्तुयें उत्पन्न होती हैं एक प्रसादाख्यरस और दूसरा किट्ट जिसको मल कहते हैं।

प्रसादाख्यरस में जो निकृष्ट कीट का अंश है उस से मल, मूत्र, पसीना, बात, पित्त, कफ़, आंख, नासिका और मुखादि का मल बनता है और रसके मध्य मांस से रोम कूप, केश, दाढ़ी, मूंछ, रोम और नखादि उत्पन्न होते हैं।

प्रसादाख्यरस से रक्त और उससे मांस और मांस से मेदा (चरबी) मेदा से अस्थि (हड्डी) और उससे

मज्जा और मज्जा से शुक्र अर्थात् वीर्य नित्य प्रति मनुष्य के शरीर में उसी प्रकार उत्पन्न होते रहते हैं जैसा कि गाड़ी का पहिया घूमता रहता है। उपरोक्त सात पदार्थों से शरीर की स्थिति एवं रक्षा होती है इसलिये इनको धातु कहते हैं सचमुच वीर्य ही जवानी का रत्न, शरीर का सूर्य, एवं इसी के शरीर में रहने से पुरुष, पुरुष कहलाता है बिना इसके मनुष्यों की गणना नामर्द एवं नपुंसकों में हो जाती है अंग्रेज़ीमें इसे सीमन (Semen) यूनानी में मनी या नुत्फा कहते हैं। वीर्य एक गाढ़ी लस्सीदार सफ़ेद एवं द्रव रूप पदार्थ है इसमें पतली पूंछ और मोटे सिर वाले अनेक जीव होते हैं जो खुर्द-बीन से दिखाई दे सकते हैं युवा मनुष्य का एक बार में लगभग १५ माशा वीर्य निकलता है इस में करीब ८ माशा के असली वीर्य एवं ७ माशा अन्य रतूबत (मैल) मिली होती है। जो वीर्य गाढ़ा नहीं होता वह सन्तानो-त्पत्ति के योग्य नहीं होता अतः जो पुरुष प्रतिदिन मैथुन करते हैं उनकी सन्तानोत्पत्ति शक्ति थोड़े ही दिनों में नष्ट हो जाती है पाश्चात्य डाक्टरों का मत है कि जिस। समय रुधिर दौरा करता हुआ अंडकोश में पहुंचता है तो वहां अंडकोश ग्रन्थि रुधिर का एक प्रकार का सत्वांश अपने भीतर खैंच लेती है और उस को सफेद बना

देती है अर्थात् जिस प्रकार ईख में रस, दही में घी, तिलों में तेल सर्वत्र रहता है वैसे ही शरीर का राजा वीर्य सर्व देह एवं त्वचा में रहता है जिस प्रकार फूल की कली में सुगन्ध आदि से ही होती है परन्तु बिना खिले जानी नहीं जाती उसी प्रकार वीर्य शरीर के साथ उत्पन्न होताहै परन्तु बिना युवावस्था आये उसकी उपलब्धि नहीं होती। अर्थात् वीर्य रुधिर के समान सब शरीर में व्यापक रह अंडकोश में श्वेतता को प्राप्त होता है जैसे कि जब गर्भ रहता है तो रुधिर जब दौरा करता हुआ स्तनों में पहुंचता है तो स्तनों की गिलटियां दूध के रूप में उसको सफेद बना देती है स्त्री के इस तत्व को रज कहते हैं और यह कुछ पीलापन लिये होता है। इसी उत्तम वीर्य और रज के मेल से श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न होती है।
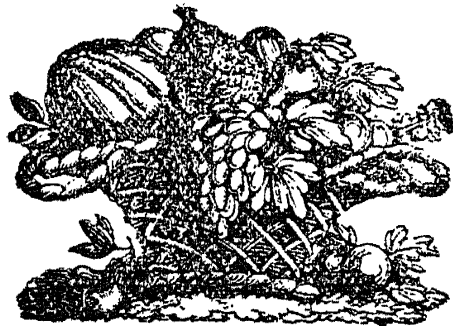
स्त्री पुरुषों के भेद का
संक्षेप वर्णन ।
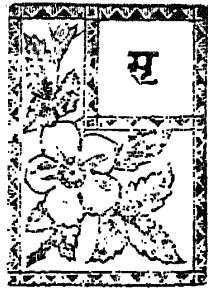
सृष्टि पर दृष्टि डालने से प्रत्यक्ष प्रकट होता है कि जिस प्रकार परमात्मा ने घोड़ा, हाथी, गाय और तोता आदि पशु पक्षी बनाये हैं उसी भान्ति सब से उत्तम मनुष्य को रचा है—क्योंकि उस को दश इन्द्रियों के अतिरिक्त बुद्धि भी दी है परन्तु घोड़े, हाथी, गाय आदि पशु और कबूतर आदि पक्षियों में एक २ जाति होने पर भी स्वभाव आदि में बड़ा अन्तर है उसी प्रकार मनुष्य और स्त्रियों के गुण, कर्म, स्वभाव में बड़े भेद हैं काम शास्त्र के ज्ञाताओं ने इनके तीन २ भेद माने हैं—इन भेदों को जानकर जो विवाह होते हैं उन में सर्वदा आनन्द रहता है ।

भेद

शशोवृषोऽश्व इति लिंगतो विशेषो नायक
विशेषाः नायका पुनर्मृगी बडवा हस्तिनी च ॥१

पुरुष-शशा, वृषभ और अश्व ।

स्त्री—मृगी, बडवा, (अश्विनी) हस्तिनी ।

इस के पीछे मनुष्य और स्त्री के चार २ भेद किये हैं वह यह हैं :—

पुरुष—शशक, मृग, वृषभ, अश्व।

स्त्री—पद्मिनी, चित्रनी, संखिनी, हस्तिनी।

—=○:*:○=—

शशक

शशा (खरगोश) शक्ति में कमज़ोर होता है मैथुन करने के पीछे एक ओर गिर जाता है इसी प्रकार इस जाति के पुरुष स्वभाविक निर्बल होते हैं। परन्तु सुन्दर शरीर वाले और मृदु भाषी होते हैं जो कलह से डरते और अभिमान नहीं करते।

मृग

जाति का पुरुष हिरन के सदृश शीघ्रगामी, डरपोक, तीव्र बुद्धि और बड़े नेत्र वाला सुन्दर होता है। स्वभाव में चतुर, अधिक हंसने वाला, लम्बे शरीर वाला, बलवान् अधिक भोजन करने वाला तथा नाचने और गाने का शौकीन होता है।

वृषभ

जाति वाला पुरुष सत्यपरायण तीव्र रतिकार चतुर परिश्रमी, अधिक कुटुम्ब वाला, जिसके शरीर में सुपारी जैसी गन्ध आती है और जिसकी जीभ लम्बी, पैर छोटे, शरीर मोटा, निडर, कम सोने वाला और अधिक रति प्रिय होता है।

अश्व

जिसका शरीर काठ के समान कठोर, निडर, अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने वाला, श्यामवर्ण वाला हृष्ट पुष्ट, बुरे स्वभाव वाला और कम सोने वाला अश्व जाति का पुरुष कहाता है।

पद्मिनी

स्त्री के शरीर में से सुगन्ध आती है, कमल के फूल के समान जिसके नेत्र, छोटे छेद वाली और ऊंची लम्बी नाक, गोल ऊंची छाती, लम्बे बाल, छरछरा शरार, मधुर वाणी, उत्तमस्व भाव, रमणी, पतिव्रता, धर्मपरायण सब प्रिय, दयालु, बुद्धिमती, नाच-गान एव प्रेम की बातों में रुचि रखने वाली, सरल स्वभाव वाली, थोड़ा भोजन करने वाली, कम सोने वाली, शीघ्र स्खलित होने वाली और कम हसने वाली होती है।

चित्रनी

का शरीर न बहुत बड़ा न छोटा, सुन्दर, तिल के फूल के समान नाक वाली, कठिन स्तन, शरीर पर कम बाल वाली, जिसके शरीर में से मछली की गन्ध आती हो, दयालु, प्रेम करने वाली, अल्प कामिनी, सत्य शीला, पतिव्रता, पूजा पाठ में अधिक प्रवृत्त, उत्तम आभूषण और वस्त्रादि के चाहने वाली, साहसी, उत्तम प्रबन्ध करने वाली, चुलबुली और गाने बजाने को पसन्द करने वाली पद्मिनी जैसे स्वभाव वाली होती है।

संखिनी

की नाक ऊँची, गले में तीन रेखा, लम्बी, दुर्बल, शरीर में खार जैसी गन्ध आवे, खूब हँसने वाली, बहुत खाने वाली, स्वतन्त्रता, सुख की इच्छा वाली और शरीर पर बड़े बाल वाली होती है।

हस्तिनी

लाल नेत्र, शरीर मोटा, नाक चपटी और मोटे बड़े छेद वाली, स्तन, होठ नितम्ब आदि मोटे, शरीर में मद्य जैसी गन्ध आवे, प्रति समय रति की इच्छुक, चटपटे भोजन करने वाली और मादक वस्तुओं को अधिक चाव रखने वाली, बहुत खाने वाली, सोने वाली चिल्ला कर हँसने वाली, अधिक काल में स्खलित होने वाली, ठिगने क़द वाली होती है।

पद्मिनी शशक गुण वाले, चित्रणी मृग, शंखिनी वृषभ और हस्तिनी अश्व गुण वाले पतियों से प्रसन्न रहती है।

प्यारे पाठक पाठिकाओ! यद्यपि मैंने कोक आदि शास्त्रों से स्त्री पुरुषों के भेद एवँ स्वभाव का वर्णन किया है परन्तु वर्तमान समय में न तो विद्वान् लोग इन लक्षणों एवं गुणों से काम लेते हैं न इस प्रकार की समानता से विवाह ही होते हैं किन्तु विवाह धन के साथ किया जाता है और अवस्था एवं गुणों की परीक्षा दूर हो जाती है जो सर्वथा ही अनुचित है। उपरोक्त रीति

से मेल कराना विद्वानों का ही काम था तथा पूर्व वर्णित गुणों की परीक्षा महान ही कठिन है। संयोग वश यदि भिन्न २ प्रकृति वालों का मेल हो जाता था तो विद्वज्जन ही अपनी योग्यता से उनकी प्रकृति को वैद्यक विद्या के अनुभूत प्रयोगों से दूर कर उनको समान प्रकृति वाला बना देते थे यहां तक कि रति शास्त्र के ज्ञाता कोका पण्डित ने इन्हीं एक दूसरे की प्रकृति को ठीक करने के लिये विविध दशाओं के लिये विविध प्रकार के आसन भी नियत किये थे परन्तु कामी पुरुषों ने उन को विषय भोग का साधन समझ व्यर्थ में वीर्य का सत्यानाश करना प्रारम्भ कर दिया। अतः न्यायशीला गवर्नमेन्ट ने उन अश्लील आसनों का छपाना बन्द कर दिया। वास्तव में कोका पण्डित ने गृहस्थी में प्रवेश करने वाले पुरुष का सन्तानोत्पत्ति सम्बन्धी अङ्ग छोटा है या बड़ा उसको ठीक रीति से काम में लाने के लिये आसन या नियमों को बतलाया पर इस समय वह नियम कैसे सध सकता है विचार कीजिये—एक धनी पुरुष अपनी इच्छा पूर्त्ति के लिये एक नहीं वरन् क्रमशः ५ और ६ तक शादियां करता है तो कहां ५० वर्ष के पतिदेव और १२ वर्ष की पत्नि। इस संयोग वा सम्बन्ध के लिये कोका पण्डित ही क्या कोई भी विद्वान् कोई नियम बना ही नहीं सकता। किन्तु मानना पड़ेगा। जिस प्रभु के अटल नियम आकाश में, समुद्र में तथा प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में निश्चल रूप से कार्य कर

रहे हैं उन्हीं जगतपिता के अटल वैदिक सिद्धान्त ही मानवीय शरीर को आरोग्य बना उत्तम संतानों को प्रदान कर सकते हैं इसलिये मिथ्या बातों एवं व्यर्थ की चेष्टाओं को छोड़-वैदिक रीति से, वैदिक सभ्यता से, वैदिक सिद्धान्तों से काम करनासीखिये तब ही आप सुख उठा सकते हैं।

कतिपय आवश्यक अंगों की व्याख्या।

अंडकोश प्रत्येक मनुष्य के दो होते हैं इन्हीं से वीर्य्य का संचालन होता है। इन में Spermatozoids नामक बारीक २ कीड़े उत्पन्न होते हैं जो स्त्री के गर्भाशय में जाकर रज के कीड़ों से मिलकर बच्चे उत्पन्न करते हैं यह कीड़े मूत्र में चल फिर सकते हैं परन्तु अन्य जल में शीघ्र मर जाते हैं। गर्भाशय में भी थोड़े काल तक जीवित रहते हैं। अंडकोश ही वीर्य्य उत्पन्न करने का मुख्य साधन हैं और इन्द्रिय (लिंग) केवल इसकी सहायक है। स्त्रियों के यह भीतर की ओर होते हैं।

Uesdeferens एक चौड़ी नली है जो अंडकोश से लिंग की ओर वीर्य्य को लाती है।

लिंग इसका शरीर स्फँजी है रुधिर के वेग से इस में कड़ापन आ जाता है। मन के द्वारा इसकी चेतन्यता होती है। इसके अगले भाग जिस को

सुपारी कहते हैं इसमें स्पर्श शक्ति अर्थात् बिजली की सी ताक़त अधिक है इसलिये इसको रगड़ से बचाने तथा स्पर्श शक्ति की प्रबलता स्थिर रखने के लिये एक खाल चढ़ी हुई है। हस्तक्रिया तथा गुदा भँजन से यह इन्द्रिय ख़राब हो जाती है तथा प्रमेह एवँ उपदंशादि अनेक रोग होजाते हैं इसलिये इस अङ्ग की रक्षा विशेषता से करनी आवश्यक है। अब स्त्रियों के अङ्ग पर ध्यान दीजिये इसके Vulva द्वार पर दोनों ओर दो परदा होठ के समान Labia नामक होते हैं ऊपर के मिलान के पास एक घुन्डी होती है जिसको Clitoris कहते हैं कामो-द्दीपन का मुख्य स्थान यही है और रति के समय लिङ्ग के समान यह चेतन्यता करता है इसके नीचे मूत्रछिद्र तथा उसके नीचे Vagina नामक वह स्थान है जिस में भोग के समय इन्द्रिय प्रविष्ट होती है क्वारी कन्याओं के यह एक झिल्ली से बन्द रहता है और युवावस्था के पूर्ण होने पर पति के प्रथम समागम से यह खुल जाता है और बच्चा होने के समय और भी चौड़ा होजाता है यह बाहर की ओर सुकुड़ा हुआ और भीतर को चौड़ा होता है और चुन्नटदार झिल्लियों से यह स्थान ऐसा नर्म--गुदगुदा वा चिकना बनाया गया है कि यह आव-श्यकता पड़ने पर फैल जाता है और चिकनाई के कारण से फटता नहीं। और न लिङ्ग वा बचा को खुर खुराहट होता है यदि यह ऐसा न होता तो बच्चा उत्पन्न होने के समय फट जाया करता और बच्चे को भी कष्ट होता।

इसलिये यह लिङ्ग का म्यान है इसकी प्रायः लम्बाई चार अँगुल की होती है। स्त्रियों के मोटे वा पतले होने से यह कमोवेश भी होजाता है इसके निकट कुछ गिलटियां होती हैं जिनमें से पसेव सा निकलता है जो मार्ग को चिकना बनाता है।

गर्भाशय यह अङ्ग नाशपाती के आकार का एक इञ्च मोटा तीन इंच लम्बा और दो इंच चौड़ा होता है गर्भ के दिनों में यह प्रायः बीस गुना बढ़ जाता है। इसके दो भाग हैं ऊपर का भाग चौड़ाई लिये गोल, और नीचे का सुकड़ा हुआ गर्दन के समान जिस के मुह में दस बून्द वीर्य्य समास के होता है गर्भाशय के ऊपर के भाग में दो नली ऊपर से आकर मिली हैं जिन के द्वारा बच्चे का पोषण होता है।

पुरुषों के समान स्त्रियों के भी दो अण्डकोश होते हैं यह बादाम के आकार की एक इँच से कुछ अधिक लम्बी इतनी ही मोटी और बहुत कम चौड़ी दो गाठें गर्भाशय के दाहिने वा बायें झिल्ली में लिपटी होती हैं इनमें भी छोटे २ कीड़े होते हैं। इसी से मिली धरन पुरुष के लिङ्ग के समान होती है। विशेष सब अङ्ग वा प्रत्यङ्ग की बनावट हमारी बनाई शरीर विज्ञान नामक पुस्तक में देखिये मूल्य ॥) डा० व्यय ।≈)
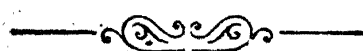
रजो दर्शन अर्थात् रजस्वला
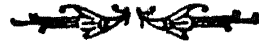
स्त्री के शरीर में रज (आतर्व) का मैल एक मास तक एकत्रित होता रहता है फिर धमनियों द्वारा वह काला-लाल वा दुर्गन्ध युक्त मल योनि के मुख से महीने के अन्त में (पके फोड़े से पीव वा रुधिर की भांति) निकलता है इसी को रजो दर्शन कहते हैं।

रज कब से कब तक निकलता है

रज निकलने का समय प्रायः १२ वर्ष से लेकर ५० वर्ष की आयु तक है। निर्बल कन्याओं को कभी २ पन्द्रह वर्ष तक भी होता है तथा ४० व र्ष से लेकर ५० वर्ष तक जब स्त्री की नसें मोटी पड़ जाती हैं तब बन्द हो जाता है।

रजस्वला का कर्तव्य

रजो दर्शन के प्रथम दिन से लेकर जब तक रज बन्द न हो तब तक दिन में सोना-काजल लगाना, रोना, स्नान करना, चंदन का लेप या उबटन वा तैल लगाना, शृंगार करना, नखों का काटना, दौड़ कर चलना, हंसना अधिक बोलना, तीक्ष्ण शब्द सुनना, कंघी से बालों का सुधारना, भूमि कुरेदना, बड़े वेग की वायु का सेवन करना, गाना, बजाना, ऊंचे स्थान से कूदना, प्रसंग और गृह कार्यों का करना इन सब को त्याग एकान्त में तख्त-चटाई या कुश की खाट पर ऊनी वस्त्रों से सोवै

अपने खाने पीने के बर्तन अलग रक्खे। मांस रहित गेहूँ बाजरा, मूंग, अरहर और आलु के साथ साधारण भोजन करे जैसा कि वैद्यकाचार्यों का उपदेश है।

ऋतौ प्रथम दिवस प्रभृति ब्रह्मचारिणी। दिवास्वप्नाञ्जनाऽश्रुयात स्नानानु लेपनाभ्यङ्ग नखच्छेदन प्रधावनहसन कथनानिलायासन्परि हरेत्।

इसके विपरीत जो रजस्वला की दशा में दिन में सोती है। उसका बालक निद्रालु आलसी होता है अंजन वा काजल लगाने से अन्धा। रुदन करने से विकार दृष्टि वाला, स्नान करने और जल सेवन करने से दुःखी तेल लगाने से कोढ़ी, नख कटाने से नख रोग वाला, दौड़ने से चञ्चल, हंसी करने से काले दाँत वाला, बहुत बोलने से बकवादी, भयंकर शब्दों के सुनने से बहरा, कँघी करने से गँजा और प्रचण्ड वायु के सेवन और कष्ट करने से उन्मत्त मतवाला बालक होता है, इस कारण इन सबको त्यागना चाहिये क्योंकि उन दिनों में प्रकृति मल के निकाल में लगी हुई है यदि उन्हीं दिनों में मन और प्रकृति को दूसरी ओर लगाया जायगा तो मल रुक कर नाना रोग उत्पन्न कर देंगे इस लिये परम विद्वान् धनवन्तरि जी आदि ने इन दिनों में किसी कार्य के करने की आज्ञा नहीं दी।

उत्तम सन्तान होने के लिये निम्नलिखित बातों पर पूरा ध्यान देना योग्य है।

१—दोनों आरोग्य हों।

२—पूर्ण अवस्था वाले हों।

३—पुरुष अमोघ वीर्य वाला हो।

४—स्त्री की योनी एवं रज शुद्ध हो।

५—परस्पर प्रेम हो।

६—ऋतु काल में यथा समय और यथा रीति समागम करना।

उपरोक्त बातों की संक्षेप व्याख्या

आरोग्यता-लक्षण

—:०:—

१—शरीर में किसी प्रकार का रोग न हो तथा उमंग, उत्साह एवं पूर्ण रीति से समागम करने की इच्छा हो तब समझना चाहिये कि दोनों आरोग्य हैं।

पूर्ण अवस्था विचार

तथा अमोघ वीर्य्योत्पत्ति का समय

२-३—जिस प्रकार प्रातः होने पर शौच, स्नान, व्यायाम, संध्या आदि व्यवहार करने पर नियमानुसार पुरुष स्त्री को भूख लगती है उसी प्रकार

दैवी शक्ति कामेन्द्रिय के प्रयोग में लाने का समय स्वयं प्रकट कर देती है देखिये जब तक समय नहीं होता तब तक स्त्री की झिल्ली मढ़ी रहती है पुरुष की इन्द्रिय में चेतन्यता नहीं होती जब समय आता अर्थात् पुरुष स्त्री जब दोनों युवा होतेहैं तब दैवयोग से झिल्ली नष्ट हो जाती है कामेन्द्रिय में रुधिर का चलना अच्छे प्रकार आरम्भ हो जाता है शरीर में प्रबलता और अंडकोष बड़े हो जाते हैं तथा उन में वीर्य्य अच्छे प्रकार उत्पन्न होता है।

इस प्रकार के चिन्ह पुरुष में १६ वर्ष से लेकर २५ वर्ष की आयु तक पूरे होते हैं और स्त्री के यह चिन्ह १२ वर्ष की अवस्था में आरम्भ हो १६ वर्ष की अवस्था में पूर्ण होते हैं इसलिये वैद्यवर धन्वंतरि जी ने लिखा है कि २५ वर्ष का पुरुष १६ वर्ष की स्त्री के साथ रति कार्य्य को करे यदि स्त्री पुरुष उपरोक्त अवस्था से जितनी २ अधिक अवस्था में इस कार्य्य को करेंगे उतना २ विशेष लाभ होगा। अर्थात् उतनी सुभोग्य सन्तान होगी और माता पिता निरोग और दीर्घजीवी होंगे परन्तु बाल्यावस्था से युवा होने तक अष्ट प्रकार के मैथुन अर्थात् किसी पढ़े व सुने वा प्रत्यक्ष देखे हुए स्त्री का बारम्बार मन में चिन्तन वा स्मर्ण करना, दूस रे स्त्रियों के रूप गुण और उस के अंग प्रत्यङ्ग का वर्णन करना तथा शृङ्गारिक गीत आदि का गाना, या इसी प्रकारकी बातें करना। तीसरे स्त्रियों के साथ खेल

खेलना। चौथे किसी की ओर बार २ देखना। पांचवें स्त्रियों में बार २ जाना। छठे-शृङ्गार रस पूर्ण उपन्यास अथवा ऐसी पुस्तकें वा नाना प्रकार के स्त्रियों के भद्दे फोटो वा नाटक इत्यादि देखकर उन्हीं बातों में लवलीन रहना। सातवें-किसी न मिलने वाली स्त्री की प्राप्ति के लिये व्यर्थ प्रयत्न करना। आठवें संभोग करना, इन सब बातों और हस्तक्रिया आदि से बच अर्थात् वीर्य नाश न कर, और अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल विवाह कर ऋतुगामी होते हैं वे स्त्री पुरुष ही अमोघ रज एव वीर्य वाले हो बलवान तथा उत्तम संतान पैदा करने वाले होते हैं। और यही पूर्णावस्था कहाती है तथा यही अवस्था अमोघ एवं उत्तम वीर्य्य बनने की है। और जो इस अवस्था से न्यून में गर्भाधान करते हैं उनके प्रथम तो गर्भ ही नहीं रहता यदि रहा भी तो गर्भपात हो जाता है यदि किसी प्रकार से नौ मास में उत्पन्न हुआ भी तो उसका जीता रहना कठिन होजाता है और यदि जीता भी रहा तो दुर्बल इन्द्रिय होता है इसलिये पच्चीस से न्यून पुरुष और सोलह व से न्यून स्त्री में कभी गर्भाधान न करना चाहिये जैसा कि—

ऊन षोडश वर्षायाम प्राप्तः पंचविंशतिः।
यद्याधत्ते पुमान गर्भं कुक्षिस्थः सविपद्यते॥
जातोवाना चिरंजीवेज्जी वेद्वानिर्बलेन्द्रियः।
तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधानं न कारयेत्॥
पंचविंशे ततोवर्षे पुमान्नारीतु षोडशे।
समत्वा गतवीर्यौ तौ जानीयात् कुशलोभिषक्॥

शुद्ध रज एवं योनी की पहिचान।

४—रज निकलने के समय दर्द न हो, रुधिर न बहुत कम निकले न ज्यादह, रुधिर के निकलने से चित्त प्रसन्न हो तथा रुधिर का धब्बा न जमे उसको शुद्ध रज समझना चाहिये, इस तरह ३६ बार जो कन्या रजस्वला हो चुकी हो उसकी योनि शुद्ध एवं गर्भाधान के योग्य होती है क्योंकि ३६ बार रजस्वला हो जाने से शरीर की अधिक गर्मी जो गर्भ को ठहरने नहीं देती निकल जाती है इस प्रकार योनि शुद्ध दृढ़ हो जाती है और गर्भाशय भी अच्छे प्रकार मजबूत हो जाता है जिस से संतानों के अङ्ग एवं प्रत्यङ्ग ठीक २ और बलिष्ठ बनते हैं।

उत्तम संतान के लिये उत्तम आहार मन की प्रसन्नता और परस्पर प्रेम की आवश्यकता।

२—उत्तम सँतानोत्पत्ति के लिये वर एवं वधू को उत्तम एवं सात्विक आहार की ऐसी ही आवश्यकता है जैसे

प्राणों के लिये वायु, एवं मछली के लिये जल की। वेदादि सत् ग्रन्थ आज्ञा देते हैं कि हे मनुष्यों यदि तुम उत्तम संतान पैदा करना चाहते हो तो मादक द्रव्यों को छोड़ संस्कार किये सतोगुणी भोजनों को करो। वैद्यकाचार्यों का उपदेश है कि मांसादि रहित शुद्ध गेहूँ चावल आदि अन्न एवँ उत्तम गाय के दूध एवँ घृत से शरीर को रोग रहित करो तब ही तुम्हारी संतान श्रेष्ठ गुणों से युक्त हो-बलवान्, बुद्धिमान, धनवान और आयुष्मान (दीर्घजीवी) होसकती है और इसके विपरीत कब्ज करने वाली बासी-चटपटी आदि वस्तुओं के सेवन से तुम्हारी संतान-मूर्ख-धनरहित और थोड़ी उम्र वाली होगी।

मन की प्रसन्नता।

संसार में जितने काम होते हैं उन में मन की प्रसन्नता की बड़ी आवश्यकता है जो काम जी लगाकर नहीं किया जाता न तो वह उत्तम होता है न पूर्ण-इसलिये स्त्री पुरुषों के मन की प्रसन्नता भी अवश्य होनी चाहिये।

दम्पति प्रेम।

जिस प्रकार श्रेष्ठ संतानोत्पत्ति के लिये उत्तम आहार और मन की प्रसन्नता की आवश्यकता है वैसे

ही दम्पति के पूर्ण प्रेम की भी कमी नहीं होनी चाहिये क्योंकि परस्पर प्रेम के ही कारण संतति धैर्य एवँ विनय आदि गुणों से युक्त हो पूज्यों की सेवा करने वाली बन, धन धान्य से पूर्ण हो कुल की वृद्धि करने वाली होती है अन्यथा नहीं।

ऋतुगामी कौन हो सक्ते हैं?

१—जो स्त्री के ऋतु मती होने पर ही यथा नियम समागम करते हैं और गर्भ स्थित होजाने पर दूर रहते हैं।

२—ऋतुगामी होना बड़ा कठिन है परन्तु जो मनुष्य प्रातः सायं भक्ति से ईश्वर उपासना करते, शान्ति चित्त रहते, वायु सेवन करते-यथा नियम शौच स्नान-व्यायाम और सात्विक भोजन एवं घी दूध और फलादि ही खाते, प्रत्येक प्रकार के नशों एवं मांसादि कामोद्दीपक वस्तुओं से दूर रहते, यथा नियम दिन में काम करते एवँ रात्रि को ६ घन्टे सोते, विषय वासना की बातों को न देखते न सुनते, उत्तम महात्माओं की सँगति में बैठते, उत्तम पुस्तकों का स्वाध्याय करते, काम-क्रोध-लोभ एवँ मोह में नहीं फँसते, धर्म एवँ परिश्रम से धनोपार्जन करते हुए परोपकारी कार्यों को करते हैं वही ऋतुगामी हो उत्तम सन्तान उत्पन्न कर अपने जीवन को सुख से व्यतीत कर सकते हैं।

ऋतुकाल

वेद और वैदिक ग्रन्थों से समागम करने के विषय में यह प्रकट होता है कि स्त्रियां स्वभाविक रीति से प्रति मास रजस्वला होती हैं उस दिन से लेकर सोलह दिन प्रसँग करने की अवधि है उसी को समय और ऋतु काल कहते हैं। इन सोलह में से प्रथम की चार रात्रि त्याज्य हैं जिन में स्त्री के रज निकलता है इसलिये इन दिनों स्त्री के हाथ का छुआ पानी भी न पिये और न देखे वरन् स्त्री और पुरुष प्रथक २ रहें। जैसाकि

ऋतुः स्वभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडशस्मृताः
चतुर्भिरितरैः- सार्द्धमहोभिः सद्विगर्हितैः ॥

इसके अतिरिक्त ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रियां भी निन्दित है बाकी रही दश रात्रि—

तासामाद्याश्चतस्रस्तु निन्दितैकादशीचया।
त्रयोदशी च शेषास्तु प्रशस्ता दश रात्रयाः॥

इन दश रात्रियों में से पूर्णमासी अमावस्या और अष्टमी आ जाय उन को भी छोड़कर जो समागम करते हैं वह गृहस्थाश्रम में रहते भी ब्रह्मचारी हैं जैसा कि—

ऋतुकालाभिगामी स्यत्स्वदार निरतः सदा
पर्वेव्रजेच्चैनां तदव्रतो रति काम्यया ॥
निन्द्यास्वष्टासु चान्यासु स्त्रियो रात्रिषुवर्जयन्।
ब्रह्मचार्येवा भवत् यत्रनप्राश्रमे वसन् ॥

इस लिये पुत्र की इच्छा रखने वाले स्त्री पुरुष सम अर्थात् ६, ८, १०, १२, १४ और १६ इन रात्रियों में और कन्या की इच्छा हो तो ५, ७, ६, ११, १३ और १५ इन रात्रियों में समागम करे जैसा कि:—

युग्मेषु तुपुमान् प्रोक्तोदिव सेष्वन्यथा ऽबला । ष्वयकालेषु शुचिस्तस्मादय त्यार्थी स्त्रियं व्रजेत ॥

अर्थात् पुरुष के अधिक वीर्य होने से पुत्र और स्त्री के रज की अधिकता से कन्या, तुल्य होने से नपुंसक पुरुष व वंध्या स्त्री और अल्प वीर्य से गर्भ ही नहीं रहता। इन सब बातों के अतिरिक्त यह भी जान लेना आवश्यक है कि उपरोक्त पुत्र और पुत्री के अर्थ जो रात्रियाँ बतलाई हैं उन में उत्तरोत्तर समागम करने और गर्भ रहने से आयु, आरोग्यता, सौभाग्य, ऐश्वर्य तथा बल वाली सन्तान होती है अर्थात् रजस्वला होने के दिन से जितना पीछे गर्भ रहेगा उतनी ही अधिक श्रेष्ठ सन्तान होगी जैसा कि:—

एषूत्तरोत्तरं विद्या दायुरा रोग्य मेव च ।
प्रजा सौभाग्यमैश्वर्यं बलं च दिवसेषु वै

ऋतुकाल के पश्चात का कर्तव्य।

पांचवे दिन [जब रज बन्द हो जाय] सिर मींज कर स्नान कर, सुन्दर वस्त्र एवं आभूषण पहन, ईश्वर को धन्यवाद दे अपने पति के दर्शन करे—क्योंकि ऋतु स्नान करने के पीछे स्त्री जैसे पुरुष का दर्शन करती है उस के उसी आकृति की सन्तान उत्पन्न होती है जैसा सुश्रुत में लिखा है:—

पूर्वं पश्येदृतु स्नाना मादृशं नर मंगना
तादृशं जनयेत्पुत्रं भर्तारं दर्शयेदतः ॥

इस हेतु यदि पति की सूरत सुन्दर न हो तो अन्य किसी सुन्दर बालक को प्रथम से प्रबन्ध कर देखले जिस से अच्छी आकृति वाली सन्तान हो।

रति करने का समय--

रात्रि के भोजन करने के पश्चात् जब वह पच चुके--भूखे पेट भी न हो किसी प्रकार का खटका और भय न हो और रति करने के पीछे सोने को भी समय मिल जाय वह समय उत्तम कहाता है। हमारी समझ में ऐसा समय आधी रात के पीछे अर्थात् १२ बजे से २ बजे तक है, क्योंकि सोने के पीछे मन, चित्त ठीक होते हैं सोने को भी समय शेष रहता है—परन्तु यह भी स्मरण

रखना उचित है कि सोने से उठ कर तुरन्त रति न करना चाहिये क्योंकि उस समय शरीर और बुद्धि सम्बन्धी सम्पूर्ण शक्तियां चैतन्य नहीं होतीं, इसलिये कुछ समय ठहर कर सावधान होकर कार्य को करे-- भोजन के पश्चात् बिना पाचन हुए रति करने से पाचन में अन्तर पड़ जाता है जिस से नसों के रोग हो जाते हैं और भूखे रहने के समय इस काम के करने में मस्तिष्क में गर्मी चढ़ जाती है कठिन सर्दी में ठण्ड प्रबल होकर शरीर की गर्मी को नष्ट कर देती है—इसलिये स्त्री पुरुष नाना प्रकार के रोगों से बचने और निरोग सन्तान होने के अर्थ इन सब बातों को विचार कर कार्य करें।

गर्भाधान किसको कहते हैं?

जिस क्रिया से गर्भाशय में वीर्य को स्थापन करते हैं अर्थात् जब स्त्री, पुरुष के संसारी सम्बन्ध से गर्मी उत्पन्न हो वायु को उत्कृष्ट कर देती है तब उस गर्मी और वायु के संयोग से वीर्य अपने स्थान को छोड़ स्त्री की योनि में गिर रज से मिल गर्भाशय में चला जाता है इसलिये इस क्रिया को गर्भाधान कहते हैं जैसा कि:—

गर्भस्याधानं वीर्य स्थापनं स्थिरी करणं यस्मिन्नेन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम् ॥

रजस्वला स्त्री से मैथुन करने से हानि

जो मनुष्य रजस्वला स्त्री के साथ मैथुन करता है उसकी आंखों की ज्योति नष्ट हो जाती है शरीर पर चकत्ते पड़-सूजाक, कोढ़, चित्तभ्रम और धातु क्षीण आदि रोग हो जाते हैं इसलिये रजस्वला से बचना योग्य है इसके उपरान्त देव-मन्दिर, मार्ग, श्मशान, प्रातः तथा सायं समय, भूखे, भोजन करके तुरन्त, रोग की अवस्था मित्र एवँ गुरु जनों के बिछोने पर, मलमूत्र के त्याग की हालत में, क्रोध में, व्यायाम के पश्चात्, थके हुए, अकामा (जिसकी इच्छा न हो) योनि दोष वाली, डरी हुई स्त्री से तथा अन्य पुरुष के सामने समागम न करे और स्त्री भी रोगी, छोटो वा बड़ी अवस्था वाले, क्रोधी, भूखे एवँ अप्रिय पुरुष को त्याग दे।

दिन में गर्भाधान करने का निषेध

अथर्ववेद में उपदेश है कि स्त्री पुरुषों को गर्भाधान क्रिया रात्रि ही में करनी चाहिये क्योंकि अन्नादि पदार्थ कमलादि रोग निवारण रात्रि में ही चन्द्रमा की किरणों से पुष्ट होते हैं उसी भांति रात्रि में गर्भाधान करने से हृष्ट, पुष्ठ और उत्तम सन्तान होती है। और ऋग्वेद मं०१। सू०५०। अ० १०। मं० २ में लिखा है कि जिस प्रकार सूर्य अस्त होने पर तारागण रात से मेल और सूर्योदय पर उससे वियोग करते हैं उसी प्रकार गृहस्थी को

गर्भाधान के लिये रात के समय स्त्री से समागम करना और दिन के समय पृथक् रहना अभीष्ठ है। अर्थात् दिन के समय सूर्य की गर्मी और पित्त का राज्य रहता है इस से मस्तक में भी गर्मी होती है। दिन में समागम करने से गर्मी और बढ़ेगी जिससे सिर में दर्द, चक्कर एवं शरीर में आलस्य आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं बुद्धि मँद हो जाती है और गर्भ भी नहीं रहता इसलिये दिन में यह कार्य न कर, रात्रि में ही इस कार्य को करना योग्य है।

प्रसंग के समय किस पर शयन करे

गर्भाधान के समय खाट लकड़ी की और पाये भी काष्ठ के हों जो बानों से बुनी हो उत्तम है:—क्योंकि इस से भीतर बाहर की बिजली रुकी रहती है--इसलिये निवाड़ी पलंग या सूत से बुने हुए जिनके पाये मुरादाबादी कलई किये पीतल के होते हैं उन पर लेटना अच्छा नहीं। इसके सिवाय खाट को दीवार के सहारे लगा कर लेटना अच्छा नहीं। क्योंकि दीवार के संसर्ग से बाहर की बिजली खाट में प्रवेश कर हानिकारक न हो जावे दूसरे सांप, बिच्छू, कानखजूरा इत्यादि जन्तु भी चढ़ कर हानि न करे।
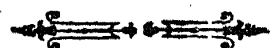
प्रसंग-विधि

स्त्री प्रसँग इस प्रकार करना चाहिये जिससे सुख की प्राप्ति हो और स्त्री पुरुष दोनों निरोग रहें, इस के लिये अथर्ववेद का० १४। सू० २। मं० ३७ व ३८ व ३९ में स्पष्ठ

आता है कि युवक युवती प्रसन्न चित्त होकर सन्तान उत्पन्न की इच्छा अर्थात् माता पिता बनने के लिये ऋतु-काल यानी गर्भाधान के समय स्त्री नीचे दोनों जंघा फैला कर पुरुष स्त्री के ऊपर रह हाथ का सहारा लगा कर स्त्री की योनी में उपेस्थेन्द्रिय अर्थात् कर्मेन्द्रिय को प्रवेश कर कार्य करे, यही उत्तम आसन एवँ रीति है। इस के विपरीत समागम समय स्त्री आधा (उल्टी) लेट कर वा दायें बायें करवट से लेट कर मैथुन न करावे क्योंकि उल्टी लेटने से वायु योनि को पीड़ित करता है, दायें लेटने से कफ़ टपक कर गर्भाशय को ढक लेता है बायें करवट लेटने से पीड़ित हुआ पित्त, रज और वायु को दूषित करता है।

इस आज्ञा के अनुसार वैद्य और हकीम और काम शास्त्र के ज्ञाता तथा अनुसधान करने वालों ने लिखा है कि स्त्री पुरुष खड़े होकर भी रति क्रिया न करें। ऐसा करने से टांगों में कम्पवायु का रोग हो जाता है थकावट अधिक होती है, श्वांस एव मस्तिष्क को हानि पहुंचती है और बैठ कर इस कार्य्य के करने से धरनि को हानि पहुंचती है और गर्भ भी स्थिति नहीं होता, स्त्री को पुरुष ऊपर सुला कर रति करने से परिवर्त्तिका रोग हो जाता है और वीर्य भी अभीष्ट पर कम पहुंचता है यदि पुत्री उत्पन्न हुई तो उसमें मर्द के चिन्ह होते हैं और पुत्र हुआ तो जनानिया होता है। इस लिये पुरुष स्त्री के ऊपर रह कर रति करे जिससे आसानी से वीर्य गर्भाशय में पहुंच जाय और किसी प्रकार की हानि न हो।
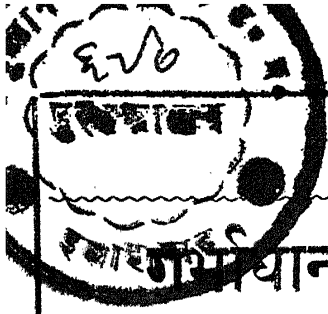
गर्भाधान के समय स्त्री पुरुष का कर्तव्य।

अथर्व का० १४। सू० २। मँ० ३९ में लिखा है कि पति पत्नी दोनों प्रसन्न बदन होकर मुख के सामने मुख, नासिका के सामने नासिका इत्यादि अंगों को यथा योग्य सीधा रक्खे। स्त्री पुरुष के गिरे वीर्य को श्वांस से खैंच कर गर्भाशय में स्थिर करे जिससे गर्भ स्थित हो और परमेश्वर की कृपा से दोनों उत्तम सन्तान उत्पन्न कर जीवन में प्रसन्न रहें ऐसा ही बृहदारण्यक उपनिषद् में लिखा है।

यजुर्वेद अ० २१ मं० ८८ में लिखा है कि स्त्री पुरुष गर्भाधान के समय में परस्पर मिलकर प्रेम से पूरित होकर मुख के सामने मुख, आंख के सामने आंख, मन के सामने मन, शरीर के साथ शरीर का अनुसंधान करके गर्भ को धारण करे जिस से कुरूप वा वक्राङ्ग सन्तान न हो।

यह भी स्मरण रखना उचित है कि जिस प्रकार पृथिवी में अन्नादि के बीज पड़कर पृथिवी की शक्ति से नीचे को जड़ और ऊपर को अंकुर निकलते हैं इसी प्रकार वीर्य एवं रज मिलकर ठीक रीति से गर्भाशय में पहुंच रुधिर के सँचार से पुष्ट हो यथा समय उत्तम सन्तान उत्पन्न होती है जैसा अथर्व का० १४ सूक्त २ मंत्र ४७ में लिखा है।

प्रसंग के पश्चात् का कर्तव्य

पुरुष थोड़ी देर ठहर कर स्त्री से पृथक् हो और स्त्री कुछ अधिक देर ठहर कर धीरज से उठ मूत्र त्याग हाथ पैर धोवे फिर दोनों यदि पित्त प्रकृति प्रधान हो तो गौ के दूध में छोटी इलायची डाल उबाल मिश्री डालकर पिये और यदि बात या कफ प्रकृति प्रधान हो तो कस्तूरी १ चावल, जावित्री, जायफल एक २ मासा छोटी इलायची ३ मासा एक सेर दूध में डाल कर उबाल, बूरा मिला पिये, क्योंकि दूध से उत्तम और कोई पदार्थ वाजीकरण नहीं है फिर अलग २ खाट पर शयन करें। प्रातःकाल शौचादि से निवृत्त हो स्नान करें, फिर जब २ गर्भाधान करना हो तब २ इसी प्रकार कार्य्य करें। गर्भ स्थिति के पश्चात् कदापि स्त्री प्रसंग न करें।

गर्भाधान के पश्चात स्त्री पुरुष का कर्तव्य

वेदों में स्त्री पुरुषों को वीर्य्य रक्षा करने का उपदेश है क्योंकि सब सुख वीर्य्य रक्षा से मिलते हैं--इसलिये गर्भ रहने के पश्चात् स्त्री पुरुष ब्रह्मचारी रहें और जब दस मास के पीछे सँतान हो जावे तब स्त्री बच्चे का पालन करे अर्थात् अपना दूध पिलावे, जब बच्चा दूध छोड़दे तब अपने शरीर की उन्नति के लिये समागम से प्रथक

रहे अर्थात् न्यून से न्यून ढाई वर्ष अधिक से अधिक तीन वर्ष के पीछे प्रसन्नता के साथ पूर्वोक्त रीति के अनुसार गर्भाधान करे-इस प्रकार कार्य करने से धनवान, बलवान, दीर्घायु और बुद्धिमान सन्तानें होंगी वही अपना और माता, पिता इत्यादि देश जाति का उत्थान कर सकेंगी— न कि वर्तमान की भांति कार्य करने से गर्भ स्थापन्न के पीछे स्त्री, पुरुष बारम्बार समागम करते रहते हैं जिस से बहुधा गर्भ भी गिर जाते हैं। द्वितीय गर्भ अवस्था में प्रसंग के समय रज निकलने से स्त्री का बल घट जाता है जिसका प्रभाव गर्भस्थ बालक पर पड़ता है अर्थात् बालक न्यून बल वाले रोगी और निर्बुद्धि होते हैं, तीसरे सिवाय विषय भोग के कोई लाभ नहीं— वरन् दोनों आगे आने वाली सन्तानों को हानि पहुंचाने के दोष भागी बनते जाते हैं। तदुपरांत सन्तान होने के पीछे उनका लालन--पालन यथा योग्य न होने के कारण सन्तानें अल्पायु में मरने लगती हैं। स्त्री प्रसव के समय शरीर त्याग कर परलोक गमन करने लगी। अथवा न्यून बल के कारण प्रसूत रोग में रोगी होकर अपने जीवन को सुखमय जीवन के स्थान पर दुःखमय जीवन बना कर घरको रोगों का स्थान बनाकर नरकमय बना लेते हैं—जिसके कारण पुरुषको भी रात दिन हकीमों वैद्यों के नुसखे पिलाते २ नाक में दम होने के उपरांत उपरोक्त आनन्द भी जाता रहता है इसके अतिरिक्त अनेकान स्त्रियाँ सन्तान उत्पन्न होने के पीछे कालांतर में रजस्वला

होती हैं। गोदी की सन्तान को दूध पिलाती हैं—बहुधा जन नाम करण के पीछे बिना रजस्वला होने के ही समागम करना आरम्भ कर देते हैं ऐसी अवस्था में समागम करने से स्त्री के रजके निकलने से स्त्री कमज़ोर होती जाती है उधर दूध पिलाने से कमज़ोरी होती है इस सूरत में सन्तान और माता दोनों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और कभी कभी ऐसी दशा में जब गर्भ रहजाता है तब स्त्री को गोद की संतान का पालन और गर्भस्थ सँतान की रक्षा का भार दोनों कठिन हो जाते हैं। तिस पर भी पुरुष समागम नहीं छोड़ते अर्थात एक बच्चा पैरों चलता है, दूसरा गोद में दूध पीता है, तीसरा गर्भ में है-- तिस पर भी समागम होता है। प्यारे स्त्री पुरुषों देश हितैषियों! टुक ध्यान देकर बुद्धि से विचार करो यह कार्य वेद और वैद्यक के विरुद्ध होने के अतिरिक्त सभ्यता के भी विपरीत है इसी कारण तो भारत रोगों का घर बन गया, बल नष्ट हो गया, बुद्धि नाम को न रही, परिश्रम के बजाय आलसी बनगये रात दिन परस्पर लड़ते २ संगठन का सत्यानाश कर—भारतका सत्यानाश कर दिया और चार सौ वर्ष की आयुके बजाय ३०, ३५ ४०, ५० वर्ष में मरने लग गये इसके उपरांत बुद्धि का यहां तक नाश मारा गया है कि बिना विद्या पढ़े बिना वेद के सुने लोभ में आकर, बातों में फंस कर, ईसाई मुसलमान होते चले जातेहैं और सच्चे पक्के बुद्धि अनुकूल वैदिक धर्म को तिलाञ्जली दे देते हैं रहे सहों में प्रेम नहीं

फिर देश जाति धर्म की रक्षा की कौन कहे—हज़ारों हिन्दू अहिंसा धर्म के मानने वाले होने पर भी गौ माता और बकरी आदि का मांस खाकर बल बढ़ाना चाहते हैं महानुभावो ! इस प्रकार के मादक द्रव्यों से बल कभी नहीं बढ़ता वरन् पाप भागी बनना पड़ता है इस लिये उपरोक्त मिथ्या बातों को छोड़ उत्तम आहार का सेवन कर--तीन वर्ष में प्रसँग करने का अभ्यास कीजिये।

वर्तमान समय के स्त्री पुरुष यह कहते हैं कि तीन वर्ष तक प्रथक रहने से इन्द्रियां शिथिल और निकम्मी हो जांयगी यह उनका भ्रम मात्र है अतः इस विषय में अब आप विज्ञानियों का हिसाब सुनकर विचारकीजिये— देखिये जो स्त्री पुरुष १ सेर प्रति दिन भोजन करते हैं तब चालीस दिन के पीछे एक सेर खून बनता है और एक सेर रुधिर से दो तोला वीर्य बनता है अर्थात् ३० दिन में डेढ़ तोला वीर्य्य बनता है—अब एक बार के स्त्री प्रसंग से डेढ़ तोला वीर्य निकलता हो तो जो स्त्री पुरुष प्रति दिन एक बार या दो दो वा तीन तीन बार अथवा चौथे, आठवें दिन समागम करते हैं उनके शरीर की जो कुदशा होजाती है वह वही स्त्री पुरुष जानते हैं फिर मानसिक विचारों का क्या कहना ? वरन् जो ऋतु गामी नहीं होते उनकी शक्ति दिन पर दिन हीन होती जाती है जिस से पाचन क्रिया में अन्तर पड़ता जाता है अंत को बद्धकोष्ट, कुपच, गठिया, राजयक्ष्मा इत्यादि और स्त्री को प्रदर, कमर दर्द और प्रसूति आदि रोग घेर लेते हैं

जिस से दोनों का जीवन दुःखमय हो जाता है आगे को सँतान भी निर्गुण निर्बल रोगी अल्पायु में मरने वाली, डरपोक, आलसी आदि होती जाती है।

कहानी

एक बार यूनान देश के तत्ववेता सुकरात से किसी ने पूछा कि स्त्री प्रसँग कै बार करना चाहिये। उत्तर मिला जन्म भर में एक बार तब उसने कहा कि इतने पर भी शान्ति न हो तो वर्ष भर में एक बार। फिर उसने कहा कि इतने में मन न भरे तो फिर मास में एक बार यदि मन इतने पर भी न माने तो मास में दो बार प्रसँग कर सकते हैं। अगर इतने पर भी शान्ति न हो तो अपने कफ़न का सामान पहिले ही से लाकर घर में रखले फिर जैसा चाहे वैसा करे क्योंकि न मालूम मौत किस समय कहाँ हो जाय। प्राचीन भारतवासी वेद की आज्ञानुसार प्रथम ब्रह्मचारी रह कर २५ वर्ष से प्रथम पुरुष और १५ वर्ष से न्यून पुत्री कभी समागम नहीं करते थे वरन् सदा ऋतुगामी होकर बल वीर्य से सँयुक्त रह कर आनन्द भोगते थे। देखो अथर्ववेद का० ३ सू० १२ मँ० २ तथा कांड १४ सू० २ मं० ३७ और का० १९ सू० २ मं० १४-१५ और ऋग्वेद अ० १ सू० ६ मँ० २ में उपदेश है कि जिस प्रकार उत्तम पृथिवी के संयोग से त्तम बीज अच्छे प्रकार

उगता है वैसे ही ब्रह्मचर्य व्रत पूर्वक युवा एवँ युवती ही उत्तम सन्तान पैदा कर सकते हैं। इन्हीं आज्ञाओं के अनुसार वैद्यक ग्रन्थों में लिखा है कि जिस प्रकार ऋतु क्षेत्र, जल और बीज के उत्तम होने और विधि पूर्वक कार्य करने से उत्तम अंकुर उत्पन्न होता है उसी प्रकार ऋतुकाल (समय) क्षेत्र (गर्भाशय) जल (अहार के पचने पर उत्पन्न हुआ रस) बीज (शुक्र और रज) के नियमानुसार सँयोग से ही उत्तम सन्तान उत्पन्न होती है।
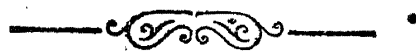
पर्व रात्रियों के त्याग का कारण

इस के जानने के लिये समुद्र के निकट जाइये अथवा वहां के रहने वालों से पूछिये कि पूर्णमासी की रात्रि को समुद्र की लहरें चञ्चल घोड़े के समान मुख से झाग निकालती हुई दौड़ी चली जाती हैं। अमावस्या को विशेष रीति पर शनैः २ नाचती हुई दिखलाई देती हैं। अष्टमी को समुद्र का पानी रेंगता हुआ जाता है, सच पूछो तो सूर्य चांद का आकर्षण और उनका प्रभाव समुद्र में ही आश्चर्यजनक परिवर्तन उत्पन्न नहा करता वरन सँसार की सम्पूर्ण नदियों, तालावों, फलों और पशुओं के रक्त में मुख्य २ परिवर्तन होते हैं क्योंकि रक्त में जल का भाग है इस लिये इन दिनों रुधिर पर विशेष प्रभाव होता है इसके सिवाय पुरुष की अपेक्षा स्त्री पर चांद का प्रभाव विशेष रीति से होता है--इस हेतु

चतुर्दशी अथवा अमावस, अष्टमी और पूर्णमासी को पुरुष. स्त्री के वीर्यादि धातु विषम हो जाते हैं इस कारण इन पर्व तिथियों पर गर्भाधान करने से एक तो वीर्य और आर्तव व्यर्थ जाने के उपरांत स्वास्थ बिगड़ जाता है— इसी कारण प्राचीन समय में इन पर्व तिथियों पर अनध्याय अर्थात् छुट्टी हुआ करती थी और इन दिनों में स्त्री पुरुष यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करते थे जिस से पुरुष और स्त्री के शक्ति की विषमता दूर होती थी इसी कारण आज तक यह पर्व दिन अर्थात् त्यौहार माने जाते हैं। प्यारे स्त्री पुरुषो ! जब इन दिनों विद्यार्थियों को पढ़ने का निषेध है—साधारण व्यवसायों के लिये जब छुट्टी मनाई जाती है तो फिर गर्भाधान से महान् काय करने की ऋषिगण क्योंकर आज्ञा दे सकते थे।

बलवान, तेजस्वी, विद्वान्, धार्मिक और गौरवर्ण संतान उत्पन्न करने की विधि

ऋतु स्नान से शुद्ध होने के पश्चात यवका मन्थ बनाकर घी मधु मिला कर श्वेत वर्ण गौ के दूध के साथ चांदी वा कांस के पात्र में सात दिन तक स्त्री नित्य पीवे और भोजन भी शट्ठी धान, यव के आटे का बने पदार्थ और दही मधु घृत दुग्ध आदि का करे और सायं

समय सुसज्जित गृह में उत्तम शय्या आदि आसन पर आराम करे। मन को सब प्रकार की वस्तुओं से प्रसन्न और पवित्र रक्खे इसी प्रकार पुरुष भी मन को प्रसन्न रखने के लिये अथावत आचरण करे तथा दोनों प्राकृतिक दृश्यों को देखा करें। सात दिन तक मैथुन स्त्री से कदापि न करे फिर आठवें दिन सिर सहित स्नान कर सुन्दर वस्त्र धारण कर फिर हवन विशेष यानी पुत्रेष्ठि यज्ञ करे फिर यज्ञ के शेष घृत को (जो थोड़ा सा होता है) दोनों भोजन में खावें फिर रात्रि में समागम करें तो मन के अनुसार अर्थात् इच्छानुसार सन्तान उत्पन्न होगी

गर्भ रक्षा के उपाय

ईश्वरी नियम से जब गर्भ स्थित हो जाय तो माता उन तत्वों की अनुकूलता का सदा ध्यान बनाये जिस से बालक बलवान और निरोग होकर पूरे समय पर उत्पन्न हो, शारीरिक और मानसिक अवस्था का भी विशेष ध्यान रक्खे, सात्विक भोजन और स्वच्छ वस्त्र धारण करे, सदा प्रसन्न रहे, क्योंकि माता की प्रसन्नता और उसके भोजन, रहन-सहन का बालक पर प्रभाव पड़ता है सदा नियमानुसार प्रातःकाल उठ कर शौचादि स्नान से निवृत्त होकर माता, पिता, पति आदि बड़ों को नमस्ते

कर, यथा-विधि सेवा करती हुई परमेश्वर की उपासना कर, गृह के योग्य कार्य्यों की भी संभाल रक्खे । चिन्ता युक्त कभी न रहे। किसी प्रकार की लड़ाई झगड़ा न करे रोने पीटने आदि क्लेश की बातों से सदा बचती रहे— तमाकू, भंग, गांजा, अफ्यून इत्यादि रेचक औषधी और बहुत निमक, अति खटाई, चने, लाल मिर्च, गुड़ तथा बासी ठँडे और मले हुए तथा सूखे भोजनों से परहेज़ करें, और घी, दुग्ध, मिष्ट, दही, गेहूँ, चावल, उर्द, मूंग आदि अन्न, पालक, तुरई, रामतुरई आदि पुष्टिकारक शाक का भोजन करें जिनमें ऋतु २ के मसाले पड़े हों, जैसे गर्मी में सुर्ख इलायची, धनिये, सौंफ, सफेदज़ीरा इत्यादि और सर्दी में गर्म लौंग, तेजपात, काली मिर्च, केशर डालकर अच्छी भांति उनको शुद्धकर डाले परन्तु अधिक भोजन, रात्रि को जागरन और क्रोध का त्याग करें और सोमलता और गुड़ चाय आदि औषधि के रस और पान का भी यथा रुचि अभ्यास करें प्रातःकाल गर्मी की ऋतु में सेब, अनार, अंगूर, मुनक्के, किशमिस मिसरी, शरद ऋतु में गिरी अर्थात् खोपड़ा, बादाम, चिरौंजी, मुनक्का छुहारे मिश्री पैसा २ भर प्रति दिन खाना चाहिये।

तात्पर्य यह है कि भोजन किये हुए आहार का एक महीने में वीर्य बनता है और वीर्य ही में जीव का निवास है जैसा सुश्रुति में लिखा है:—

जीवो वसति सर्वस्मिन्देहे तत्र विशेषतः।
वीर्ये रक्ते मले यस्मिन् क्षीणे याति क्षयंक्षणात्

जीव सब शरीर में वास करता है जिनके क्षीण होने से जीव शरीर से क्षण भर में निकल जाता है।

जब सन्तान उत्पन्न होने के निकट दिन रहें तो ज़ीरा सफेद प्रत्येक भोजन में खावे अधिक परिश्रम न करे—सवारी पर चढ़ना, मल मूत्र का रोकना, उकरूं बैठना कुरूप और अंगहीन स्त्री पुरुषों से अधिक वार्त्तालाप करना योग्य नहीं। नर्म गुदगुदे कपड़े को बिछाकर सोना उचित है और सिर के नीचे ऊंचा तकिया रखना उचित नहीं। सूने घर में न जावे उत्तम वायु में रहे स्वच्छ पानी पीवे। तेल उबटन शरीर में अधिक न मलावे, प्रसंग कदापि न करे, सींगी और जोंक जुलाब से बचना योग्य है, बिजली आदि कड़े शब्द सुनना न चाहिये, हम्माम में स्नान न करे और सिर में बार २ तेल न डाले क्योंकि इससे नजला, खाँसी श्वांस होजाता है जिससे गर्भपात होने का भी भय है। सरदी के दिनों में नीचे के अङ्गों को अच्छी प्रकार ढाँपे रहे और दिन में भी अधिक सोने की टेव न डाले। पाँचवें महीने कदापि ऊँची नीची भूमि पर न चढ़े और बोझ भी न उठावे और सोने के पश्चात् सावधानी से उठे क्योंकि ऐसी दशाओं में बालक के उलट पलट हो जाने का भय है, फिर ऐसे बालक के उत्पन्न होने के समय प्रथम पैर आते हैं फिर सिर, जिसे प्रसूता और बालक को बड़ी हानि और क्लेश होते हैं बहुधा ऐसे समय में स्त्री और बालक के जीवन में दुविधा हो जाती है, क्योंकि सिर के

रुकने और वायु के न पहुंचने से दम घुट कर मर जाते हैं. ऐसी दशा में बहुत बुद्धिमान दायी हो वह भी चतुर वैद्य या डाक्टर की सम्मत्यानुसार इस काम को करें, (ऐसे बच्चे को हिन्दी में विष्णुपद कहते हैं) और पांच महीने के पीछे पन्द्रहवें दिन दायी को दिखलाया करे जिससे किसी प्रकार की हानि न हो गर्भ से चार माह तक गर्भ गिरने को गर्भश्राव और चार महीने उपरांत गिरने को गर्भपात कहते हैं।

पुत्र और पुत्री होने का कारण

ऋग्वेद अ० का० ६। सू० १२ । मं० १२ और यजुर्वेद अ० १९ मं० २७ में लिखा है और ऐसा ही वैद्यकाचार्यों का मत है कि स्त्री का रज अधिक होने से कन्या और पुरुष वीर्य अधिक होने से पुत्र उत्पन्न होता है। जैसा कि:—

गर्भ-परीक्षा

जब स्त्री गर्भवती होती है तो वह ऋतुमती नहीं होती स्तन का मुंह छोटा पड़ जाता है, नेत्रों के पलक चिपटने लगते हैं, निराहार मुंह मचलाता है, पथ्य भोजन करने पर भी वमन होता है, मुंह का स्वाद बिगड़ जाता है, बिना भोजन किये भी तृप्ति सी रहती है, आराम की लालसा लगी रहती है क्योंकि हाथ पांव

भारी मालूम होते हैं, नीचे के अङ्ग में आलस्य अधिक रहता है, कभी २ सिर में दर्द भी होने लगता है, मिट्टी कोयला, राख, खट्टी सौंधी, नमकीन चीज़ों के खाने को जी चाहता है, किसी २ को दस्त आने लगता है, किसी २ को कब्ज़ हो जाता है, दांत, कान में किसी के दर्द होने लगता है, कलेजा धक २ करने लगता है, प्यास कम लगती है, रोम खड़े हो जाते हैं, इन उपरोक्त बातों से जाना जाता है कि स्त्री गर्भवती है।

यदि इसकी परीक्षा करनी हो तो शहद को पानी में मिला कर पिलाने से नाभि में दर्द होगा। स्त्री को प्रसंग की इच्छा नहीं रहती यदि ऐसे समय में प्रसंग किया जाय तो नाभि से गर्भाशय तक दर्द होता है क्योंकि उन दिनों में गर्भाशय बन्द होता है। इन उपरोक्त बातों के सिवाय जब गर्भ रह जाय तब स्त्री का परम धर्म यही है कि सब प्रकार से उसकी पूर्ण रक्षा करे और अनेकान कष्टों और विघ्नों को अटल धैर्य द्वारा सहन कर सुयोग्य सन्तान उत्पन्न करे और सदा ध्यान बनाये रहे कि पृथिवी नाना प्रकार के भूतों को धारण कर सब का पालन करती है जो स्त्री सहन शक्ति से बुद्धि द्वारा विघ्नों को हटाती है उस को प्रसव समय अधिक कष्ट नहीं होता और उसका बच्चा पूरे दिनों में उत्पन्न होता है। इस लिये परिश्रम करने वाली स्त्रियों को प्रसव का अधिक कष्ट नहीं जान पड़ता। हां परिश्रम न करने वाली शहरों की स्त्रियों को प्रसव पीड़ा

का भय बहुत दुःख देता है। गांव की स्त्रियां अपने खेतों पर बच्चा जन अपने घर चली आती हैं इस लिये तुम सदा थोड़ा २ काम कर धैर्य को धारण करने की टेव बनाये रहो जिस से प्रसव समय क्लेश न हो।

गर्भ में पुत्र या पुत्री होने की पहिचान
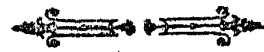
[१] गर्भिणी अपने दूध में जुएं को छोड़े जो रेंगने लगे तो पुत्र और न रेंगे तो पुत्री।

[२] चुकन्दर के पत्ते पीस कर स्त्री नाश ले यदि छींक आ जावे तो पुत्र और न आवे तो पुत्री।

[३] दाहिनी आंख कुछ बड़ी सी दीखती है इसी प्रकार दाहिनी जांघ मोटी और भारी जान पड़ती है तथा जो स्त्री अपने वाम अङ्ग को अधिक काम में लावे, पुरुष संगमकी प्रबल इच्छा हो, जिसका गर्भ बांई कोख में एकत्रित रहता हो जिसका गर्भ गोल न हो अर्थात् फैला हुवा हो जिसके बांये स्तन में दूध की धार पहले निकली हो तो जानना चाहिये कि उसके गर्भ में कन्या है। इन से विपरीत लक्षण होने पर पुत्र और दोनों के लक्षण मिले हुये होने पर नपुन्सक सन्तान होती है।
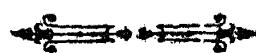
गर्भपात के लक्षण और चिकित्सा

गर्भवती स्त्री की नसों में अत्यन्त पीड़ा का होना, अंग का शीतल पड़ जाना, लज्जा का जाता रहना, कभी २ कूले में दर्द होना, खून आना, छातियों का मुरझाना, दूध का निकलना और गर्भाशय में दर्द होना यह चिन्ह गर्भपात के हैं।

यदि अनुचित आहार विहार के कारण गर्भिणी स्त्री के दूसरे वा तीसरे महीने रजोदर्शन हो जाय तो गर्भ स्थित नहीं रह सकता क्योंकि उस समय गर्भ में सार उत्पन्न नहीं होता यदि चार मासके पश्चात् रजोदर्शन हो तो रजोदर्शन के होते ही स्त्री को कोमल सुखदायक-शीतल बिछौने बिछाकर ऐसी चारपाई पर शयन करावे जो सिरहाने की ओर कुछ नीची हो फिर अत्यन्त शीतल जलमें मुलहटी का चूर्ण और घी डालकर खूब मिलावे और उसमें एक रुई के फोहे को भिगो कर गुह्यस्थान अर्थात् उपस्थेन्द्रिय में रख देवे और नाभि के नीचे सौ बार अथवा सहस्र बार धुले हुये घृत का चारों ओर लेप करे फिर गाय के दूध वा मुलहटी के शीतल क्वाथ का सेवन करे अथवा शीतल जल का पेड़ू पर तड़ाड़ा दे अथवा बड़ की कोपलों से सिद्ध किये घी, दूध में रुई का फोहा भिगोकर योनि में रख देवें या इसी औषधी में से दो तोला खिला देवे तथा घी और दूध ही देवे। पद्म,

उत्पल* कुमुद+ केशर इन को शहद और मिश्री में मिलाकर चटावे। सिंघाड़ा, पुहकर बीज और कसेरू खाने को देवे, बला, अतिबला, शाली (सांठी चावल) और काकोली× इनको गर्म दूध के साथ खिलावे अथवा शहद और चीनी मिले हुये लाल चावलों का कोमल सुगन्धित और शीतल थोड़ा भात देवे।
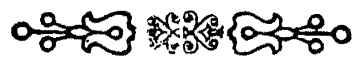
गर्भ में बालक के मरने के लक्षण

जिस स्त्री का गर्भ चलता फिरता न हो प्रसव वेदना [उत्पन्न समय का दर्द] न होता हो शरीर काला वा पीला पड़ गया हो श्वाँस में दुर्गन्ध आती हो शरीर शीतल पड़ गया हो पेट में पत्थर सा टुकड़ा जमा हुआ जान पड़ता हो दोनों नेत्र शिथिल पड़ गये हों गहरी श्वांस आती हो व मल मूत्र समयानुसार न होता हो तो जानना चाहिए कि बालक गर्भ में मर गया है और ऐसी दशा में एक छटांक गौ का गोबर डेढ़ पाव जल में घोल कर पिलावें तो बालक हो जावेगा और सांप की कैंचुली की धूनी भी उस गुप्त स्थान में देवें परन्तु चतुर दाई और

* उत्पल कमल गट्टा वाले फूल को कहते हैं।

+ कुमुद नीले रङ्ग के फूल को कहते हैं उसके पास की केशर लेवे।

× काकोली यदि न मिल सके तो मुलहटी देवे सिंघाड़े और कसेरू आदि थोड़े २ देवे। अधिक देनेको आवश्यकता नहीं

योग्य वैद्य को बुला लेना चाहिए क्योंकि मरे हुए बालक का पेट से निकालना चतुरों का ही काम है ।

गर्भवती के लिये नौ मास का आहार और उपाय ।

गर्भ समय से बालक के उत्पन्न होने तक सदा सायङ्काल और प्रातःकाल नियत समय पर स्वच्छ और कोमल भोजन करे । इसके अतिरिक्त प्रथम मास में रात्रि के समय बिना किसी औषधि के न बहुत गर्म न बहुत ठण्डा दूध मिश्री मिलाकर पीवे दूसरे और तीसरे महीने में शहद और घी मिला कर, चौथे महीने में एक तोला मक्खन मिलाकर, पांचवें महीने में थोड़ा घी मिलाकर, छठे और सातवें महीने में मधुर औषधियों से सिद्ध किया हुआ दूध और घी इतना पान करे जो जठराग्नि को मन्द न करे और अच्छे प्रकार पच जावे ।

यदि सातवें मास गर्भिणी के उदर में दाह जान पड़े तो सिरस के फूल ४ माशा, धाय के फूल ४ माशा, पीत [पीली] सरसों दो माशा और मुलहटी ४ माशे के चूर्ण को स्तन और उदर में मालिश करे अथवा कुड़ा की छाल [जिसको कुरुई भी कहते हैं] ४ माशा, तुलसी के बीज दो माशा, मोथा २ माशा और हल्दी ४ माशा इनको कूट कर मालिश करे ।

यदि स्तनों में खुजली हो तो हाथ से न खुजलावे किन्तु मालती के फूल ६ माशा और मुलहटी ६ माशे

को ॥ पाव भर पानी में औटावे जब छटांक भर बाकी रहे तब उसमें कपड़ा भिगो कर धो डाले यदि खुजाये बिना कल ही न पड़े तो धीरे २ पोरुओं से सहारा देवे ऐसी दशा में मधुर और बातनाशक भोजन थोडी चिकनाई और नमक डालकर देवे और जल भी थोड़ा ही देवे।

आठवें महीने में घी डाल कर दूध देवे, नवें महीने में उपस्थेन्द्रिय पर तेल का फोया रख देवे, इस प्रकार खान पान व्यवहार करने से स्त्रियों को मल मूत्र सुख पूर्वक होते रहते हैं सन्तान उत्पत्ति में बहुत कष्ट भी नहीं होता है और सन्तान भी उत्तम होती है।

गर्भाशय में बालक बनने और रहने का वृत्तांत

प्रथम मास में बीज रूप रहता है दूसरे महीने में गाढ़ा होकर पिण्डाकार हो जाता है तीसरे महीने में सम्पूर्ण इन्द्रिय और अङ्गावयव एक ही साथ उत्पन्न हो जाते हैं इस समय में इसके चित्त में वेदनाओं की उत्पत्ति होती है इस कारण गर्भ कुक्षी में फड़कता है इस समय में गर्भिणी के इच्छा के प्रतिकूल कोई कर्म न करे उस काल में गर्भिणी जिस २ वस्तु की इच्छा करे वही २ देवे परन्तु कोई गर्भनाशक कार्य न करने दे। यदि किसी तीव्र वस्तु पर गर्भिणी का मन चलायमान हो तो भी उसकी इच्छा को न रोक कर उसमें हितकारी वस्तु मिला कर देवे क्योंकि उसकी इच्छा को रोकने से वायु

प्रकुपित होकर शरीर के भीतर जाकर गर्भ को नष्ट अथवा कुरूप कर देती है।

पांचवें महीने में गर्भ स्थित हो जाता है इस लिये गर्भिणी का शरीर अधिक भारी हो जाता है।

छठे महीने में गर्भ का बल और वर्ण अधिक बढ़ जाता है इस कारण स्त्री के बल और वर्ण की हानि हो जाती है।

सातवें महीने में गर्भ सब तरह से परिपूर्ण हो जाता है इस कारण गर्भिणी स्त्री उस महीने में अति मलिन हो जाती है।

आठवें मास में गर्भ के परिपूर्ण हो जाने से रस बाहिनी नाड़ियों के द्वारा गर्भ से माता और माता से गर्भ बार बार ओज* को ग्रहण करते रहते हैं इस कारण माता बार बार प्रफुल्लित और बार बार मलीन हो जाती है इस समय में अधिक सावधानी से कार्य करना चाहिये।

माता की कुक्षि में गर्भ का मुख माता की पीठ की ओर रहता है शिर ऊंचे को करके सम्पूर्ण अङ्ग को सकोड़े हुए जटायु में लिपटा हुआ पड़ा रहता है। गर्भ की नाभ एक नाड़ी होती है जिस को नाल कहते हैं वही माता के हृदय में लगी होती है उसी के द्वारा गर्भ को अहार पहुंचता है अथर्ववेद का० १ सू० ११ म० ४ में लिखा है कि यह एक झिल्ली होती है जिसे जेरी कहते हैं

* सातों धातुओं के रस को ओज कहते हैं।

बालक उत्पन्न होने पर नाभि आदि के बन्धन से छूट कुछ बालक के साथ बाहर निकल आती है कुछ रह जाती है जिस के रह जाने से रोग हो जाने की सम्भावना है इस लिये ऐसा यत्न करे जिस से वह निकल जाय और प्रसूता निरोग रहे।

गर्भ के पूरे दिनों में गर्भिणी की शारीरिक और मानसिक अवस्था को विशेष ध्यान से स्वस्थ रक्खे क्योंकि माता के प्रसन्न और सुखी रहने से बालक भी सुखी और प्रसन्न रहता है और दशवें अथवा ग्यारहवें महीने में बालक माता के गर्भ में बहुत शीघ्र चेष्टा करता है तब वह उत्पन्न होता है जैसा अ० का० १ सू० ११ में लिखा है। ऋग्वेद मं० ५ सू० ७८ मं० ८ में लिखा है कि जैसे वायु से वृक्ष और समुद्र हिलता है उसी भांति दस महीने वाले बालक गर्भ से जरायु के साथ नीचे आ उत्पन्न होते हैं।

बालक के शरीर में कौन २ वस्तु किस २ से बनती है

केश, दाढ़ी, मूँछ, रोम, हड्डी, नख, दाँत, रगें, नस नाड़ी और वीर्य यह पिता के अँश से बनते हैं और मांस

रुधिर, मेदा, मज्जा, हृदय, नाभि कलेजा, जिगर, तिल्ली, आंत, वायु इन्द्रिय आदि कोमल अँग माता के अँश से उत्पन्न होते हैं। शरीर रस के द्वारा घटता बढ़ता है। आत्मज्ञान, मन, इन्द्रियगण, प्राण, अपान, आकृति, सुख दुःख, इच्छा, द्वेष, चेतना, धृति, बुद्धि, स्मृति, अहंकार और प्रयत्न यह आत्मा से उत्पन्न होते हैं। भक्ति, शील, शौच, द्वेष, मोह, त्याग, भय, क्रोध, तन्द्रा, उत्साह, मृदुलता और गम्भीरता यह शान्त स्वभाव से उत्पन्न होते हैं।

आसन्न प्रसवा के लक्षण।

जांघ, कमर और पीठ में दर्द होता है। पसली के नीचे गड्ढे पड़ जाते हैं। मल मूत्र बार बार आता है। भोजनों की इच्छा नहीं होती। चलने फिरने को मन नहीं चाहता, मन में आलस्य, शरीर के नीचे के भाग में भारीपन और आंखों में शिथिलता इत्यादि लक्षणों से जानना चाहिये कि प्रसव शीघ्र होने वाला है।

आसन्न प्रसवा के पास ऐसी स्त्रियों को रक्खे जिन के बहुत सन्तान हो चुकी हों, जो गर्भिणी से प्रेम रखती हों, जो प्रसन्न चित्त परिश्रम सहने वाली और कार्य करने में प्रवीण हों। गर्मी की ऋतु में दिन के समय भीतर मकान में रहना चाहिये और रात को पटे खुले हुए मकान में और जाड़े के दिनों में बन्द मकान के भीतर (जिस में धूप भी जाती हो) रहना योग्य है और वहाँ आग भी जलती रहे।

धात्री अर्थात् दाई

तरुण और बलवान, अपने कार्य में चतुर और निर्भय हो, शुद्ध वस्त्र वाली और जिस के नख बड़े न हों अथर्ववेद का० १। सू० ११। मँ० ५ में कहा है कि प्रसव समय बड़ी सावधानी से प्रसूता के अँगों को आवश्यक्तानुसार कोमल मर्दन करे।

प्रसूता के रहने का स्थान।

इन लक्षणों के प्रकट होने पर प्रसूता को ऐसे मकान में रक्खे कि जो आठ हाथ लम्बा और चार हाथ चौड़ा होवे जिस का द्वार पूर्व वा दक्षिण की ओर होवे जिस की दीवारें पुती हुई होवें जो स्वच्छ रमणीक और सुगन्धयुक्त होवे उस में वस्त्र, ओढ़ने, बिछौने के कपड़े, अग्नि, जल, ओखली और मलमूत्र त्यागने के स्थान भी होवें। इस के अतिरिक्त उस में अनेक वस्तुऐं ऋतु के अनुकूल होनी चाहियें (अर्थात् शीतकाल में सर्दी से बचाने वाली और ऊष्णकाल में ठँडक पहुंचाने वाली) इस के उपरांत राई, श्वेत सरसों, नींब के पत्ते की धूनी गृह, प्रसूता और बच्चे के वस्त्रों को देना योग्य है।

अथर्ववेद सूक्त ११ मँ० ३ में उपदेश है कि प्रसव होने से पहिले प्रसूतिका गृह को देश और काल के अनुसार बनावे जिस से प्रसूता स्त्री और बालक भले प्रकार स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट रहें।

व्यथायुत गर्भिणी उपचार।

शरीर में तेल लगा कर गर्म पानी से स्नान कर, थोड़ी सी मूंग की खिचड़ी खाकर, कोमल तकिये और बिछौने के पलंग पर दोनों जांघ फैला कर बैठे, गर्म दूध या गर्म पानी पीवे या तीन माशे सौंफ और गाय का दूध पाव भर और १ सेर पानी को औटावे जब पानी जल जावे, तो गुनगुना पिलावे वा काले सांप की कैंचुली और मैनफल का चूर्ण बनाकर उसका धुआँ गर्भद्वार को दे वा पोई के पत्ते और जड़ पीसकर और इन्द्रायन की जड़ वा तिल का तेल मिलाकर गर्भद्वार पर रक्खे। बड़ी पीपरी पानी में पीस कर गर्म कर अण्डी का तेल मिला नाभि पर लेप करे या खोया और साबुन की बत्ती बना कर लगावे। वा चुम्बक पत्थर जांघ में बाँधे वा किसी हुलास से छींक ले वा हीरे की कनी अपने पास रक्खे। अथवा कूट २ माशे, इलायची २ मा०, बच २ मा०, चीता २ मा० और कंजा २ मा० का चूर्ण बना कर सुंघावे और कमर पसली, पीठ आदि स्थानों पर आहिस्ता २ तेल लगावे अथवा बाँस की जड़ को पीस कर नाभि पर रक्खे फिर मीठे शान्ति दायक बचन बोले तो बच्चा शीघ्र होजावेगा और क्लेश कम होगा परन्तु गंडा आदि मिथ्या बातों से बचा रहे॥

प्रसव के पश्चात् का काम।

बालक उत्पन्न होते ही समय देखे कि गर्भ नाड़ी (नाल) बाहर निकल आयाहै या नहीं। यदि न निकली होतो

एक स्त्री अपने हाथ से प्रसूता की नाभि के ऊपर ज़ोर से दबावे और दूसरे हाथ से पीठ पकड़ कर अच्छे प्रकार हिलावे और पांव की एड़ियों को नाभि के पास लावे भोज पत्र, कांच, मणि और सांप की कैंचुली की धूनी देवे अथवा सौंफ, कूट, मैनफल, हींग इन को तेल में डाल उसमें रूई का फाया भिगोकर............में रक्खे तो नाड़ी बाहर निकल आवेगी ॥

नाड़ी छेदन विधि ।

नाल को जड़ से पकड़ अच्छे प्रकार सूते फिर जड़ के पास तथा ४ अंगुल बाद बाँध बीच में पैनी छुरी से तुड़ी पर अंगूठा रख सावधानी से काटे। यदि नाभि पक जाय तो लोध ४ मा० मुलहटी ४ माशा, दारुहल्दी ४ माशे को पीस टिकिया बनाकर एक छटांक तेल में पकावे फिर उस तेल को नाभि पर चुपड़ता रहे नाड़ी के नियमानुसार न छेदन करने से नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं इस लिये इस पर विशेष ध्यान देवें और अनुचित प्रकार से कट जाने पर तथा योग्य चिकित्सा करावे इसके पश्चात् सोने की सलाई से जीभ पर घी और शहद मिला कर ओ३म् शब्द लिखे और थोड़ा सा घी और शहद चटावे। फिर उसके कान के पास दो पत्थर के टुकड़ों को बजावे, ठंडे अथवा गर्म जल से धीरे धीरे मुखको पोंछे इससे बालक का प्रसव समय का कष्ट दूर होजाता है प्राण प्रफुल्लित हो जाते हैं, फिर मंद मंद हवा करता रहे जब चैतन्य हो जावे फिर उसको स्नान

कराकर उसके तालु, ओष्ठ, कंठ और जिह्वा का मार्जन करे इसके अनन्तर नाखून कटी हुई अंगुलियों में धुनी हुई रुई का फाया लपेट कर बालक के तालु में चिकना रुई का फाया लगा देवे, नाक को भी ठीक कर देना चाहिये क्योंकि उत्पन्न होने के समय दबने से चिपटी हो जाती है फिर उपस्थेन्द्रिय की सुपारी त्वचा को ऊपर चढ़ा सुपारी को अच्छी तरह धो साफ़कर तेल लगा खाल को नीचे उतारदे। इसी भांति आंखों के पलक आदि अङ्ग यदि जुड़े हों उनको नश्तर से चीरकर पृथक कर देना चाहिये। यदि गुदा का छिद्र बन्द हो तो खोल देना चाहिये। और मस्तक अधिक लम्बा हो तो दोनों हाथों से दबा कर सीधा सुडौल कर देना योग्य है। हे सुन्दरियो! इस समय की सावधानी से सब अङ्ग ठीक हो जाते हैं वरन् थोड़ी सी असावधानी से फिर बहुत हानि होती है और उमर भर सुख नहीं मिलता इसलिये यह सब कार्य तुम्हारे हाथ हैं।

इसके उपराँत एक सप्ताह के अनन्तर बच्चे को दो तीन बार दिन में नियत समय कर पाँव पर बैठावे इस प्रकार अभ्यास होजाने पर बालक बिस्तर पर मल मूत्र न कर आवश्यकता होने पर वह किसी इशारे से अपनी माँ आदि को समझा दिया करेगा। बालक को ५, ६ सप्ताह तक खूब सोनेदे जब तक कि वह आप न जागे न जगावे और जब आठ नौ सप्ताह हो जावें तब नियत समय पर सुलानेका स्वभाव डाले जिससे रात्रि को माता

की नींद में कुछ हानि न हो। बहुधा स्त्री सोने से जगा देती हैं इस दशा में बच्चा सम्पूर्ण दिन रो रो कर काटता है। जिस स्थान पर बालक सोता हो वहां चिल्लाहट न करे। बहुधा स्त्रियां सोते हुये बच्चे की मिट्टियाँ लेती हैं यह बात भी अनुचित है सोने से बच्चे का शरीर प्रफुल्लित हो जाता है। मन प्रसन्न रहता है बच्चों को अचानक न जगाना चाहिये। बहुधा मातायें बच्चे को सोने के अर्थ अफ़ीम खिलाने का अभ्यास डालती हैं, यह बहुत ही हानिकारक है ऐसा करने से उसकी आरोग्यता में अन्तर पड़ जाता है और ज़रा सी अधिक दे देने से उनके जीवन में अन्तर पड़ जाने का भय रहता है॥

इस प्रकार बालक उत्पन्न होने और उसकी देख भाल अच्छे प्रकार कर—प्रसूता की सुध लेनी योग्य है।

ओनार अर्थात् झिल्ली
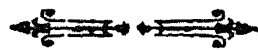
जरायु जिसको जेरी झिल्ली कहते हैं जिसमें बालक गर्भ के भीतर लिपटा रहता है कुछ उस में से बालक के साथ निकलती है कुछ पीछे, यह जरायु बालक उत्पन्न होने पर नाभि आदि के बन्धन से छूट जाती है और सार रहित होकर माता के उदर में ऐसी फिरती है जैसे सेवार जलाशय में। जिसके शरीर में रह जाने से नाना रोग हो जाते हैं इससे उसका निकल जाना आवश्यक है जिस से प्रसूता निरोग होकर सुखी रहे—गाय भैंस के पेट से

बच्चा होने के पीछे जेरी गिरती है. उसी भांति जब तक जेरी न गिरे तब तक स्त्री के पेट पर हाथ रखे रहना चाहिये यदि पीर बन्द हो जांय और औनार न गिरे तो बारम्बार हाथ को पेट पर फेरना योग्य है जिससे थोड़ी देर में पीर उत्पन्न होकर जेरी गिर पड़ेगी। खींचकर कभी न निकालना चाहिये जैसा कि बहुधा मूर्ख स्त्रियां किया करती हैं जिससे रोग हो जाने का भय होता है— इसी भांति जब कभी मूर्ख दाई भीतर के अङ्ग में हाथ डाल देती है और उसके नख की चोट कहीं जरायु में, लग जाती है उससे ज्वर आजाता है इस लिये बुद्धिमान दाई से कार्य कराना चाहिये।

यदि ज्वरादि होतो चतुर वैद्य और योग्य डाक्टर को दिखाना चाहिये ठंडा पानी किसी दशा में भी न देना चाहिये सर्दी के दिनों में आग भी जलती रखना भला है वरन पसली, जमोघा इत्यादि बीमारियां हो जाती हैं। जिनसे असंख्य जानें यमपुर को चलीजातीहैं और बच्चों को गठिया आदि रोग हो जाते हैं जिससे उमर भर का सुख चला जाता है इसके उपरांत ४० दिन तक तेल लगवा कर गर्म जल से स्नान और क्रोध, प्रसंगादि का त्याग करना योग्य है।

प्रसूता को दस दिन तक चरुवे का पानी पीना उचित है जिसमें ३२ औषधियां होती हैं उनको पानी में डाल औटाते हैं वही चरुवे का पानी कहलाता है जो ३२ औषधियां न मिल सकें तो पीपर, पीपरामूल, गजपीपर

मोचरस, चीता, सोंठ और गुड़ इनको पानी में औटाकर पिलावें अथवा दशमूल काढ़ा देवें जिसमें शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी दोनों कटेली, गोखरू, बेलगिरी, अरनी अरलू पाढ़, कुमेर, पीपल इन सबकी बराबर मात्रा लेकर काढ़ा बना पिलाना उचित है यदि इसका अर्क खींचलें तो फिर प्रति दिन का बनाना जाता रहे।

बहुधा स्त्रियाँ बच्चा उत्पन्न होने के पीछे जच्चा को बैठा देती हैं जिससे लोहू बहुत सा निकल जाता है और स्त्री बहुत कमज़ोर हो जाती है। इस से लोहू निकलना अच्छा नहीं।

प्रसूता को ३ दिन तक अन्न न देना चाहिये क्योंकि उन दिनों में भोजन पचने की शक्ति नहीं होती इस लिये उन दिनों में दूध देना सब से उत्तम है परन्तु इस देश में हरीरा देती हैं जो घी, गुड़ और अजवायन को औटाकर बनाती हैं यदि सुहागसोंठ* को बना कर थोड़ी थोड़ी दें और ऊपर से दूध पिला दिया करें तो बहुत अच्छा हो अगर ऐसा न कर सकें तो सोंठ को पीस छान, फँकी करा, ऊपर से दूध पिला दें तो बच्चा और जच्चा दोनों को लाभ हो, जच्चा का सोना भला है इस लिये वहां नाना प्रकार के शब्द न होने चाहियें प्रसूता को लेटे ही लेटे धो पोंछकर स्वच्छ कर देना योग्य है, फिर सब स्त्रियों को अलग कर किवाड़ फेर अन्धेरा कर दे जिससे उसको नींद आजावे। यदि प्रसूता को ज्वरादि

* ४) रु० सेर में हमारे यहां से उत्तम बनाई हुई मंगा सकते हैं।

न हो तो तीन दिन पीछे पाचन और कोमल भोजन मूंग की दाल आदि देना उचित है, छः मास तक पुरुष से समागम न करे, जो २ वस्तु गर्भ रहने के समय और उत्तम व्यवहार बताये गये हैं उन पर भी ध्यान बनाये रहे इनमें किसी प्रकार की गड़बड़ न करे वरन् जन्म भरका दुःख हो जाता है और निर्बल रह जाती है और दूसरे सन्तान भी श्रेष्ठ नहीं होती. सुहाग सोंठ से बच्चा और जच्चा दोनों को आरोग्यता मिलती है और बल बढ़ता है।

सुहाग सोंठ की औषधियां।

सोंठ बैंदरा	१॥ पाव	बकरी का दूध	५ सेर
घी गऊ का	१ पाव	चीनी	२॥ सेर
दालचीनी	१॥ तोला	तेजपात	१ तोला
छोटी इलायची	२ तोला	नागकेशर	१। तोला
स्याह जीरा	१ तोला	सौंफ	१ तोला
अकरकरहा	१॥ तोला	जावित्री	१ तोला
बिधारा	१ तोला	कमलगट्टे की गिरी	१॥ तोला
पीपरामूल	१ तोला	त्रिफला	२ तोला
वरियारा की जड़	२ तोला	चाब	१ तोला
चीता	१ तोला	मोथा	१॥ तोला
खस	१॥ तोला	नागौरी असगन्ध	२ तोला
सफेद चन्दन	१ तोला	काला अगर	१ तोला
सफेद जीरा	१ तोला	लौंग	१॥ तोला
शतावर	१ तोला	सफेद मूसली	२ तोला
सोंठ	२ तोला	पीपर	१ तोला
मिर्च	१॥ तोला	जायफल	१। तोला
सिंघाड़ा	२ तोला	कंकोल	१॥ तोला
अजमोद	१ तोला	मुनक्का	१ छटांक
किसमिश	२ छटांक	अखरोट	२ छटांक
बादाम	१ पाव	पिस्ता	१ छटांक

* बनाने की रीति *

सब से प्रथम सोंठ को कूट छान ले और दूध को कड़ाही में औटावे, जब आधा दूध जल जावे तब उस पिसी हुई सोंठ को डाल देवे और करछी से बराबर चलाता जावे जिस से दूध न जल जावे और जब खोया हो जावे तो कड़ाही चूल्हे पर से उतार लेवे और खूब भून लेवे, बाद साफ़ कड़ाही में चीनी की चासनी बना ले और सब औषधियों को कूट छान कर, मेवाओं को साफ़ कर कतर, सब को चीनी की चासनी में मिला-आधी आधी छटांक के लड्डू बनालें, प्रातःकाल अपने बल के अनुसार लड्डू खाकर ऊपर से दूध मिश्री डालकर पिये ।

स्तन रोग और उसकी चिकित्सा

स्त्रियों के जब तक गर्भ नहीं रहता तब तक उनके किसी प्रकार के स्तन रोग नहीं होते क्योंकि उस समय तक स्तन सम्बन्धी नसों का मार्ग बन्द रहता है इस कारण वहां कोई दोष भी नहीं पहुंच सकते* ॥

सम्पूर्ण प्रकार के स्तन रोगों में स्त्री का दूध बिगड़ जाता है यदि बात की प्रबलता होती है तो दूध कसीला हो जाता है और पानी में डालने से पानी के ऊपर तैरता रहता है पित्त की प्रबलता होने पर दूध खट्टा और कड़वा हो जाता है और पानी में डालने से उस की पीली २

* स्त्रियों के समस्त कठिन रोगोंकी चिकित्सा हमारी बनाई (युवती रोग चिकित्सा) में देखिये मूल्य ।=)

रेखा सी चमकने लगती है, कफ़ की प्रबलता होने पर दूध में गिलगिलापन होता है और वह पानी के भीतर बैठ जाता है जब तीनों दोषों की प्रबलता होती है अथवा चोट लग जाती है तो उस में तीनों दोषों के चिन्ह दिखलाई देते हैं।

निर्दोष दूध की पहिचान।

जिस स्त्री का दूध जल में डालने से मिलकर एक हो जाय, पाँडु वर्णवाला रहे, जिस में मीठापन हो और कुछ अन्तर न पड़े, जो शीतल, निर्मल, पतला और शंख के समान श्वेत हो, जो झागदार न हो, जो पानी में न तैरे, न डूबे तो जानना चाहिये कि दूध निर्दोष है।

इस के उपरांत जिस दूध के पीने से बच्चे का पेट ही न भरे अर्थात् पीता ही चला जावे और दुबला होता जावे तो उस को दूषित दूध समझना चाहिये। उपर्युक्त लक्षण से भिन्न लक्षण दीख पड़ें तो—२ तोला नीम के पत्तों को ऽ।॥ पाव पानी में गर्म कर के जब ऽ॥ रह जावे तो उस में १ तोला शहद और ३ पीपल मिलाकर चार या छः दिन प्रसूता को पिला कर तीसरे पहर को वमन (कै) करावें और कै हो जाने पर नित्यप्रति मूँग का रस खवावें अथवा त्रिफला ६ माशे, और घी १ तोला पान करावे अथवा भारङ्गी ४ माशे, वच २ माशे, अतीस ४ माशे, देवदारू ४ माशे, पाढ़ ४ माशे, मोथा ४ माशे, मुलहटी ४ माशे, और कुटकी ४ माशे इन द्रव्यों का

क्वाथ [काढ़ा] पान करावे तो दूध का शोधन होजायगा यदि कै कराना उचित न हो तो गोबी ४ मा० झाऊ ४ मा०, देवदारू ४ मा०, चिरायता ४ मा०, बनमूली ४ मा०, कुटकी ४ मा०, गुर्च ४ मा०, सोंठ ४ माशा, नागरमोथा ४ मा०, और इन्द्रजौ ४ माशा को ऽ। भर पानी में औटा कर जब पौन छटांक रह जावे तब पिलावे, इस के अतिरिक्त क्रोध, शोक करने वा बालक पर प्रीति न होने पर स्तनों में दूध नष्ट हो जाता है इस कारण माता या दाई को सदा प्रसन्न रक्खे-उस को जौं या गेहूँ का दलिया, शाली चावल, साठी चावल, कसेरू, सिंघाड़ा, कमलनाल, विदारीकन्द, महुआ, शतावरी नालिका, घी, साठी चावल की खीर, हल्दी, पीपल, सोंठ पीपलामूल, जीरा आदि का हरीरा-घी, शक्कर की चाशनी बनाकर देवे या और ऋतु के शाक खिलावे इस से दूध बढ़ जायगा।
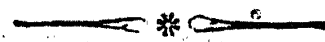
प्रसव होने के समय से दो वर्ष तक उपयोगी शिक्षा।

उत्पन्न हुए बालक का ऐसे मकान में पालन करे जहां बहुत प्रकाश और वायु का तेज न हो, इस के पीछे बालक को कभी २ धीरे २ हिलाया करे और बाहर की हवा और प्रकाश दिखलाना चाहिये और ५ या ६ दिन तक प्रसुता को अपना दूध न पिलाना चाहिये। क्योंकि

उसके दूध में उन दिनों एक प्रकार का बुरा रुधिर रहता है इस लिये बकरी या गाय के दूध में थोड़ा पानी मिला कर गुनगुना करके रुई के फोयेसे देना चाहिये। ताकि मुंह को किसी भांति क्लेश न हो और बालकों को दूध का स्वाद मालूम हो जावे वरन १ तोला गुड़ और थोड़ी सी अजवायन मिला कर जल में औटा ले फिर छानकर देवे और ४० दिन तक बालक को प्रति दिन सरसों का तेल लगाकर स्नान कराना योग्य है चूंकि तेल लगाने से बच्चों के चमड़े तथा शरीर में बल उत्पन्न होता है परंतु यह भी स्मरण रहे कि पानी गुनगुना हो यदि गर्मी के दिन हों तो सन्ध्याके चार बजे और सर्दी के दिन हों तो दिन के बारह बजे पर माता या चतुर दाई जब बच्चा सोकर उठे उसके एक घन्टे पीछे स्नान करावे और पानी धीरे २ थोड़ा २ करवे की धार से डाले जिससे बालक रोने न पावे फिर सफेद कपड़े से पोंछ स्वच्छवस्त्र पहिनावे परन्तु इस बात का ध्यान रखना भी आवश्यक है कि कपड़े तंग न हों कि जो शरीर की बाढ़को रोकें और बच्चे को क्लेश दें, और इतने ढीले भी न हों जो बालक के हाथ पैर हिलाने से फंस जायें। जाड़े के दिनों में रुई या पशमीने की टोपी और कनटोपे से कान भी दाबे रहे, चौथे या छटे दिन जब मलिन हो जावें तुरन्त उतार डालें और दूसरा पहना देवें सिरको नंगा न रक्खें बच्चे को मां का दूध ४० या इससे अधिक दिन तक नहीं पिलाना चाहिये क्योंकि प्रसूता का शरीर उन दिनों

निर्बल होता है इस हेतु उसके दूध में भी निर्बलता होती है इस लिये माता का दूध पिलाना वर्जित है ताकि प्रसूता का शरीर भी हृष्ट पुष्ट हो जावे नहीं तो मां का दूध बहुत उत्तम और लाभकारी है, इस लिये इन दिनों में धाय का दुग्ध पिलाना योग्य है धाय की उमर २० या ३० वर्ष के लगभग हो जो उत्तम स्वभाव शीलवती सुन्दर शोभायमान, बलिष्ठ और रोग रहित हो और जिसको बच्चा जने छः महीने या ३० दिन हो गये हों उसका दूध पिलाना चाहिये. परन्तु माता की सब प्रकार से धाय पर दृष्टि रहे और उसको भोजन आदि अति गुणदायक (जो बल, बुद्धि, निरोगता के देने वाले हों) खिलाना चाहिये, जिससे बच्चे के शरीर में बल, बुद्धि आदि उत्तम गुणों का प्रवेश हो। धाय से परिश्रम कम लेना चाहिये दूसरे धाय को इस दशा में प्रसंग करने से वर्जित करें, सदा शरीर और वस्त्र को स्वच्छ बनाये रहे।

और जो मनुष्य धाय का प्रबन्ध न कर सकें तो उनको गौ के दूध में समान पानी और चीनी के बजाय मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये। बासी दूध बालक को कदापि न दे और जब उदर रोग हो जावे तब आधा दूध और आधा पानी थोड़ा सा बहेड़ा सोंठ वा जल के साथ उबाल कर जब दूध रह जाय उसी दूध को पिलाना चाहिये और जब अजीर्ण हो तो दो चार बूँद चूने के पानी को मिला कर देना उचित है और जो बालक दूध न पीता हो तो उसकी जीभ में सेंधानमक, नमक, आंवला शहद, घी और हर्र को पीस कर लगाना चाहिये।

फिर ज्यों २ बच्चे की अवस्था बढ़ती जावे त्यों २ पानी कम करती जावें और नियत समय पर पिलाने का स्वभाव डालें उससे दूध अच्छे प्रकार पचेगा और समय पर भूँख लगेगी। भारत की देवियां प्रात समय बच्चे को दुग्ध पिलाती रहती हैं चाहे बच्चा किसी प्रकार से रोता हो वह उसको भूँखा ही समझती हैं और दुग्ध पिलाती हैं परन्तु यह रीति अत्यन्त हानिकारक है, तीन महीने के पीछे बार २ रात्रि में दुग्ध पिलाना छोड़ दें अर्थात् १० बजे रात्रि के दुग्ध पिलाकर सुला दें फिर प्रातःकाल ४ बजे उठा कर पिलायें।

यदि बच्चे की स्वास्थ्य की दशा उत्तम हो तो ६ या १० महीने के बीच में दुग्ध छुड़ा कम करती जायें और बच्चा निर्बल हो तो १८ या १६ महीने में दुग्ध को छुड़ावें।

जब बच्चा २० महीने का हो जाता है तो उस दशा में संसारी भोजनों की आवश्यकता होती है उस समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखना आवश्यक है।

बर्तन स्वच्छ और पवित्र हों अन्न स्वच्छ एवं अच्छे प्रकार रंधा हुआ हो कच्चा न रह जावे और बलिष्ठ और आरोग्यता तथा बुद्धि के देने वाले भोजनों को बालक को थोड़ा २ खिलाना योग्य है जिससे पच जावे। बहुधा माता के विकारी दूध पीने से बालक का मुख पाक अर्थात् मुहाँ हो जाता है, वह दो प्रकार का होता है एक सफेद, दूसरा लाल।

सफेद मुहां—जब बालक के मुंह में सफेद मलाई सी जमी और फटी २ सी वस्तुएँ दीख पड़ती हैं मुख से लार बहुत गिरती है उसको सफेद मुहां बोलते हैं।

लालमुहां—जब बालक के मुख में लाल दाने या छाले पड़ जाते हैं उसको लालमुहां बोलते हैं।

सफेद मुहां की औषधि।

[१] सफेद कत्था ६ माशे, शीतलचीनी १० दाने काफ़ूर १ रत्ती, तीनों पानी में पीस अंगुली से मुख में लगावें, [२] पीपल की छाल और पत्र दोनों सुखाय बराबर ले कूट छानकर एक रत्ती के अनुमान दिन में चार पांच बार शहदके साथ चटावें, [३] छोटी इलायची के दाने २ माशे, कत्था सफेद २ माशे, हाथीदाँत जला हुआ २ माशे, इन सबको बारीक पीस कर थोड़ा २ मुंह में डाले [४] कत्था सफेद २ माशे को ६ माशे भेड़ के दुग्ध में पीसकर थोड़ा मुँह में डालें।

लालमुंहा की औषधि।

त्रिफले को पाव भर पानी में औटा कर उस पानी में रुई भिगोकर दिन में तीन चार बार मुख धोया करें माता को पथ्य से रहना योग्य है।

दांत—प्रकट हो कि दांतों के निकलने के समय बालकों को बड़ी २ कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं इसलिये माता को निम्नलिखित चिन्हों से परीक्षा करके उपाय करना चाहिये जिससे क्लेश न हो। मुंह से लार गिरती

हैं, मसूड़े गर्म और सुर्ख मालूम पड़ते हैं, बालक अपनी अँगुलियों को चाबता है, प्यास के कारण बारम्बार दुग्ध पीता है परन्तु दर्द के कारण शीघ्र छोड़ देता है, दस्त और कै भी आने लगते हैं, बालक रोता है और गाल सुर्ख हो जाते हैं।

जब ऐसा हो तो उसी दिन से धीरे २ अन्न के भोजनों को न्यून करे और दुग्ध अधिक करती जावें यहां तक कि उसका पालन दूध ही पर होने लगे, और मसूढ़ों पर शहद और नोनको मिलाकर दूसरे तीसरे दिन मले या बाबूना के फूल को थोड़ा गर्म करके मसूढ़ों पर मले और मुलहटी कुचल कर बालक के हाथ में देदे जिसको वह चूसता रहे और दर्द कम हो जावे, यदि दर्द की अधिकता हो और इस उपाय से कुछ लाभ न हो तो फिर किसी बुद्धिमान् डाक्टर को बुलाकर मसूढ़ों को चिरवा देना योग्य है, और कुछ सँदेह किसी प्रकार का न करें क्योंकि इस उत्तम रीतिसे दो चार दिन तो क्लेश रहता है फिर किसी प्रकार की हानि नहीं होती शीघ्र आराम हो जाता है, और इन दिनों में बालकों को गर्म टोपी पहनाना चाहिये यदि गर्मी के दिन हों तो शिर को गर्मपानी से धोना उत्तम है, और जब उत्तम दशा में दस्त अधिक हों तो बेल के गूदे में मस्तगी मिलाकर देना उचित है, और सदा इस बात का स्मरण रक्खे कि बालकों को कभी कब्ज़ अर्थात् अफरा न हो इस लिये यही मुना-

चित है कि दूसरे तीसरे दिन घूँटी दे दिया करें घूँटी की दवा यह है:—

पोदीना ४ रत्ती, सौंफ ४ रत्ती, मरोरफली ४ रत्ती, सोंठ २ रत्ती, अमलतास ४ रत्ती, पलास पापड़ा ४ रत्ती, पित्तपापड़ा ४ रत्ती, उन्नाव १ रत्ती, जीरासफेद ४ रत्ती, नरकचूर २ रत्ती, सनाय ४ रत्ती, सुहागा २ रत्ती, कालानोन ४ रत्ती यह औषधि प्रत्येक ऋतु के लिये लाभदायक हैं जब घूँटी लेने को जावे तो योग्य है कि प्रत्येक औषधि को तोला २ कर लेवे और प्रत्येक को देख भाल स्वच्छ कर मिलावे क्योंकि बहुधा दूकानदार कम मूल्य देने से खराब और कुछ की कुछ कमती बढ़ती दे देते हैं जिस से लाभ नहीं होता वरन् नाना भाँति से हानि होजाती है, बच्चे की घांटी को बुद्धिमान दाई से उठवाकर फिटकरी को महीन पीस कर शहद में मिलाकर कौवे पर लगावे अथवा सिर धोने की मट्टी को जला सिरके में मिलाकर तालु पर रक्खे। अच्छे बच्चों के पाखाने का रङ्ग पतला और हरा होता है, और दुर्गन्ध भी कम आती है यदि इस में कुछ उलट पलट हो तो शीघ्र ही किसी चतुर वैद्य को दिखलाना चाहिये परन्तु यह भी स्मरण रहे कि भोजनों के खान पान से मल में दुर्गन्ध आने लगती है यदि बच्चे को अजीर्ण हो तो दस्तों की औषधि न दे वरन् गुलाब के जल में शहद मिलाकर दो तीन बार करके थोड़ा २ पिलावे तो शीघ्र ही आराम हो जावेगा।

प्रगट हो कि बालकों को जो २ बीमारियां होजाती हैं उनका मूल कारण माता के दुग्ध में विकार का होना है यदि माता सदा पथ्याऽपथ्यनुसार भोजनादि व्यवहार करे तो कदापि बालक रोगों से पीड़ित न हो और न ऐसे रोगों का रोना मचे, जैसा कि मचा रहता है, तिस पर तुर्रा यह है कि यहां के निवासी बहुधा बालकों के रोगों में झाड़ा फूंकी उतारे आदि लुहार, बढ़ई, डोम, चमार, काछी, लोधे, क़साई आदि से कराया करते हैं कि जिनसे हज़ारों बच्चे परमधाम को चले जाते हैं, जिनके प्राण त्यागने पर माता, पिता की जो दशा होजाती है उसका हम वर्णन नहीं कर सकते, इस लिये प्यारे भ्रातृगणों इन मिथ्या प्रपञ्चों को त्यागो और इन बीमारियों में धैर्य धारणकर चतुर वैद्यों से ही औषधि कराओ।

पसुली—बालकों की हाफ़ी को पसुली की बीमारी कहते हैं। इस बीमारी में यकायक बालक खेलते हुए आखें पलटने लग जाते हैं, मुख का रङ्ग बदल जाता है, मानों चलने का सामान होजाता है, यदि उनको वायु लगे और कुछ पानी छिड़का जाय तो होश में आजाते हैं, परन्तु यहां की तो स्त्रियां मूर्खता के कारण चारों ओर से घिर जाती हैं हाय २ कर झाड़ा फूंकी भांति २ से करने लग जाती हैं, कहीं लाल मिर्चों की धूनी, कहीं जूते में आग लगा देती हैं और कुत्ते की पसुली जलाकर उसका धुआँ बालक की पसुली को देती हैं और उसी के टुकड़े को अपने द्वार के चौखट के नीचे और चौराहे में

गाड़ देती हैं, आटे की पसुली बनाकर कुत्ते को खिलाती हैं। सच तो यह है कि बालकों को आप मार डालती हैं, पितादि को भी सिड़ी बना लेती हैं उस बेचारे का नाक में दम कर देती हैं। हा शोक ! हा शोक !! हा शोक !!! हे मनुष्यों ! क्या इसी का नाम मनुष्यता है जो मनुष्यों के सत्संग में रहने पर भी स्त्री अज्ञान ही रहे ? यह केवल हमारी और तुम्हारी ही भूल है जो उनको सुज्ञान होनेकी ओर ध्यान नहीं देते जिसके कारण हज़ारों मनुष्य बे सन्तान रह जाते हैं–हे दैव ! आपही कृपाकर भारत-वासियों के नेत्र खोल दीजिये।

हे बन्धुवर्गो और प्यारी बहनों ! यह बीमारी ऐसी नहीं है कि जिस से बालक मर ही जावें, हां उपरोक्त अज्ञानता के कारण कुछ की कुछ औषधि देने आदि के सबब से मर जाते हैं। यह रोग दो प्रकार से होता है एक तो वायु पित्त के कोप से, और दूसरा वायु से, इस लिये दोनों का लक्षण लिखते हैं—

वायु पित्त के लक्षण-दस्त पतला हो पेशाब कम और गर्म हो, प्यास के कारण होंठ चाटे, दूध भी कम पिये, सिर को बार २ घुमाये, हाथ पैरों को तन्नाये।

वायु के लक्षण–मल के सूख जाने से पाखाना नहीं होता, पेट फूल भी जाता है, पेशाब भी कम हो, नाक के छेद सूख जाँय, और नाक की राह स्वांस भी कम आये पेशाब का मुक़ाम कुछ भीतर सिमट जाय, मुख की रङ्गत सफ़ेद होजाये, नाक की ओर बार २ हाथ चलावे।

प्रथम दस्त को गाढ़ा करने के लिये जंगली बेल का पका हुआ गूदा २ माशा धाय के फूल १ माशा, जमनी की गुठली १ माशा, मस्तगी २ मा०, मिश्री ८ माशा पीस कूट छानकर दिनमें ५ खुराक कुएं के ताज़े पानी में दो २ माशे घोल कर दे और माता को कड़ी वस्तु अर्थात् रोटी और पूरी आदि न खाना चाहिये, वरन् पुराने चावल और मूँग की दाल बराबर २ लेकर अच्छी खिचड़ी (कि जिसमें पकने के समय ६ माशे अदरक को काटकर डाल देना भी योग्य है) खाना चाहिये, और पेशाब खुलकर होने के लिये खरबूजे की मींगी ५ माशे, इलायची सुर्ख के दाने एक माशे पीस कर इन की दो खुराक कर पानी में घोलकर दें।

वायु की औषधि—गुलकन्द ४ माशे, शाह्पसन्द १ माशा, इलायची सुर्ख के दाने १ माशे इन सब के चार भाग कर सुबह से शाम तक खिलाना चाहिये, यदि इससे पाखाना खुलकर न आवे तो जलापा एक रत्ती, गुलकन्द चार माशे मिलाकर गर्म पानी में खौलाकर दें।

लेप—अमलतास का गूदा २ माशे, काला नमक एक माशा इन दोनों को पानी में घोलकर गर्म कर बार बार पेट पर लेपकरे तो भी पाखाना खुलकर हो जावेगा।

पसली पर लेप—बारहसिंघा, सोंठ, अफ़यून—इन सब को एक माशा लेकर गुनगुना कर पसुली पर लेप करे।

जमोघा—जब माता के दूध में बिकार हो जाता है और उस बिकारी दुग्ध के पीने से बालक के भेजे के

प्रथम भाग में एक शुद्दा पड़ जाता है और कुदशा होजाती है, बालक को यह बीमारी ऐसी है जैसी तरुणों को मृगी और जब तीनों भागों में शुद्दा पड़ जाता है तो वह बच्चे मर जाते हैं, हमारे देश के बहुधा जन उस को भूत प्रेत समझ कर गण्डे, तावीज़ झाड़ा फूँकी में लगे रहते हैं, कोई बन्दर लाकर बांधते हैं, कोई बन्दूक छुड़ाते हैं कोई उतारे उतारते हैं इसी प्रकार सैकड़ों प्रकार के अनुचित व्यवहार करते हैं। और मुख्य बीमारी की कुछ चिन्ता नहीं करते यहां तक कि तीनों भागों में शुद्दे पड़ जाते हैं इस लिये सर्व जनों को उचित है कि जब कभी यह बीमारी बालकों को हो उसी समय योग्य वैद्य से उपाय करावें, और बहुधा इसी बीमारी के अन्त पर सूखा की बीमारी हो जाती है और प्रथम भी सूखा की बीमारी होती है, दोनों के लक्षण देखकर औषधि कराना योग्य है।

जमोघा के लक्षण।

जीभ के नीचे की नसें हरी जान पड़ती हैं, श्वाँस अच्छे प्रकार से नहीं आती जाती है, नींद कम आती है, मुखड़े पर सफ़ेदी छा जाती है, पेशाब सफ़ेद होता है, आंखों के पलक जल्दी खोलता मारता है, मुख से फेंसकुर निकलता है।

सूखा के लक्षण ।

कान ठण्डे रहते हैं, तालू दब जाता है, पेशाब कम जाता है, जीभ चटकती है हथेलियां गर्म रहती हैं । *

नोट-इनके दूरकरणार्थ हम कुछ औषधि भी यहां लिखते हैं:-

(१) मोती अनबिधे एक माशा, बंशलोचन १ माशा कछुए की सूखी खोपड़ी एक माशा, सफ़ेद इलायची के दाने १ मा०—एक पैसाभर अर्क केवड़ा में खरल करके मूँग की बराबर गोली बनाकर प्रातःकाल एक गोली दें ।

(२) सफ़ेद इलायची के दाने ३ मांशे, केसर ६ मा०, मोती ४ रत्ती, बंशलोचन ६ मा०—एक छटांक शहद की चाशनी कर इन सब औषधियों को डालकर रख छोड़े और प्रातःकाल ४ रत्ती प्रति दिन दे ।

प्रलेप—कछुए की खोपड़ी ३ मांशे, केसर १ मा० अफ़ीम ५ मा०, इन सब को एक छटांक तिल्ली के तेल में जलाकर छानले और ८ या १० दिन तक शरीर पर मले । ऐसे बच्चों के कण्ठ में ऊदसलीब को लटका देवें या मूँगे की लकड़ी से दोनों भौंहों के बीच में दाग़ दें ।

विस्फोटक अर्थात् शीतला ।

सम्पूर्ण बालकों को एक रोग हुआ करता है जिससे सम्पूर्ण शरीर पर छोटी२ फुन्सियां (फफोलों की आकृति में) उत्पन्न होजाती हैं जिसको हिंदू विस्फोटक मुसलमान

* बालकों के कठिन रोगों की चिकित्सा हमारी बनाई "बाल रोग चिकित्सा" में देखिये मूल्य ।=)

चेचक और अंगरेज़ इस्मौलपाक्स कहते हैं, यह एक ऐसा दुष्ट रोग है कि जो इस में फंसता है वह मानों मृत्यु से संग्राम करता है, यदि इस से बच गया तो मानों नवीन जन्म धारण किया परन्तु स्मर्णार्थ ऐसे चिन्ह पड़ जाते हैं जो जीवन भर नहीं जाते और बहुधा अङ्ग भङ्ग होकर अन्धे, लूले, लङ्गड़े, बहरे हो जाते हैं कि जिस के प्रभाव से उन का जीवन ही निष्फल हो जाता है।

जिस गृह में यह रोग होता है उसकी वायु बिगड़ जाती है जिस से अन्य पुरुषों के जीवन में भी हानि होती है परन्तु महान् शोक का स्थान है कि इस समय भारत के बहुधा निवासी इस रोग को एक देवी मानते हैं कि जिस की पूजा के अर्थ माली, चमार आदि से मन्त्र तन्त्र और नीम की डाली हिलाते और चौराहों में शर्बत चढ़वाते हैं और कहते हैं कि देवी प्रसन्न हो जायगी सो यह पुजारी हमारे भाइयों को खूब लूटते हैं और उन के गृहों में जाकर खूब शिर हिलाते हैं और कहते हैं कि हमारी भेंट चढ़ाओ मैं देवी हूँ तुम्हारे बालक शीघ्र अच्छे हो जांयगे नहीं तो भेंट ले जाऊंगी, जहाँ ऐसी ऊट-पटांग बात बनाई हक्का बक्का हो चकित रह जाते हैं उस समय तन, मन, धन से उन पुजारियों की सेवा में तत्पर हो जाते हैं और किञ्चित विचारांश नहीं करते, यदि दैवयोग से अच्छा हो गया तो सम्पूर्ण आयु अच्छे प्रकार चैन से उड़ाते हैं वरन् उन की भी हानि नहीं होती।

हे प्यारे भाई बहिनों ! यह एक प्रकार का रोग है और रोग दूर करने के अर्थ परमेश्वर ने औषधि को बनाया है सो इस समय झाड़ मन्त्रों में फंस कर रोगों को असाध्य कर देते हैं कि जिसके कारण अनेक बच्चे परमधाम को चले जाते हैं और नाना भांति से क्लेश उठाते हैं और द्रव्य का सत्यानाश मारते हैं, और माली आदि अज्ञानी शठ जो हमारे तुम्हारे यहां आकर पुजारी बनते हैं वह अपने घर के बालबच्चों को क्यों नहीं बचा लेते, जब वह अपनी प्यारी सन्तानों पर कुछ नहीं कर सकते तो हमारे और आपके यहां क्या कर सकते हैं।

देखो अङ्गरेज़ तथा मुसलमानों के यहां भी तो यह रोग होता है वह शीघ्र औषधि कर अपनी सन्तानों को आराम कर लेते हैं और आप सुख में रहते हैं, और हम इसके विपरीत नेत्रों से देख भाल कर भी नाना प्रकार के कारागार में गिरते चले जाते हैं और अपार दुःखों को उठा रहे हैं।

यह रोग गर्भाधान से ही प्रत्येक बालक के पेट में रहता है। क्योंकि जब स्त्री रजस्वला नहीं होती और गर्भ रह कर रक्त बन्द हो जाता है उस रक्त की गर्मी बालक के पेट में रहती है। जब वह पृथ्वी पर आता है तब समय पाकर वह अपना प्रकाश करती है, इसके नाश करने के अर्थ वैद्यों ने हिन्दुस्तानी टीका निकाला है जिस को 'भेद' कहते हैं इस से बालक तो बच जाता है, परन्तु

उस को क्लेश बहुत होता है, सो अब सरकार के चतुर वैद्यों ने टीका लगाने की एक सुगम रीति निकाली है कि जिस से किसी प्रकार की हानि नहीं होती जो इस समय प्रचलित् है, सो आप भी इस टीके को प्रसन्नता-पूर्वक अपने बालकों के लगवाइये जिस से आनन्द की प्राप्ति हो और सन्तान-मृत्यु आदि कठिन क्लेशों से बचे। माली आदि के बुलाने से हानि के उपरान्त कुछ लाभ नहीं होता।

बच्चों की सर्दी जो खांसी से हो।

दारचीनी ४ रत्ती, लौंग १ रत्ती, अलसी ४ रत्ती, काकड़ासींगी २ रत्ती, इन सब को पीस कर १ तोला शरबत खशखश में मिलाकर दिन रात में चार बार चटावें यदि खांसी गर्मी से हो तो रब्बुलसूस १ रत्ती, अफीम १ रत्ती, शहद ६ माशे इन सब को मिलाकर दिन रात में ५, ६. बार चटावे।

भगन्दर—बालक के भगन्दर चाहे बहिर्मुखवाला हो चाहे अन्दर मुख वाला हो उसके लिये विरेचन, अग्नि कर्मशास्त्र, क्षारकर्म अहित हैं. केवल मृदु और तीक्ष्ण औषधियों को काम में लावें।

अमलताश, हल्दी, अहिस्र इन के चूर्ण को शहद और घी में सानकर उसमें सूत की बत्ती को लपेट कर व्रण में लगादे यह व्रण शोधन में हितकर है यह योग भगन्दर को ऐसा शीघ्र अच्छा कर देता है जैसे वायु मेघ की गति को कर देते हैं।

स्त्री पुरुष के वीर्य दोष परीक्षा ।

(१) गेहूँ अथवा जौं-व गङ्गाफल या पेठे के बीजों को स्त्री पुरुष पृथक् २ बोवें और जब कल्ला निकल आवे तब अपने २ वृक्ष पर स्त्री पुरुष पेशाब करें फिर जिसके पेड़ों की जड़ सूख जावें उसकी ही धातु में दोष जानना चाहिए ।

स्त्री की विशेष परीक्षा के लिये--जब स्त्री को क्षुधा लगे तब वह गाय के दूध में कपड़ा तर करके गुह्य इन्द्रिय में रखले यदि दूध की गंध मुखमें आने लगे तो जानले कि स्त्री में कुछ दोष नहीं है ॥

उत्तम धातु के लक्षण—जो धातु निर्बल चमकीली चेपवाली हो और जिस को मक्खी खाती हों वह उत्तम जानों वरन् ख़राब ।

भाइयो ! इसी प्रकार और भी बहुत परीक्षा और लक्षण वैद्यक शास्त्रों में लिखे हैं जिन को चतुर वैद्य जानते हैं उन से ही. रोगों को शान्ति करना योग्य है न कि मूर्ख जनों से ।

धातु के दोष दूर करना—अब हम धातु पुष्ट करने की एक उत्तम औषधि लिखते हैं। चाहिये कि ४० दिन तक पथ्याऽपथ्य विचार कर सेवन करें और जब आराम हो जावे और अपना पुरुषार्थ रखना चाहें तो स्त्री प्रसंग को सदा नियमानुसार (जैसा कि हम लिख चुके हैं) करें और धातुवर्द्धक और पुष्टिकारक औषधि भी खाते रहें कि जिस से सदा आरोग्य बने रहें क्योंकि वीर्य रक्षा से ही सर्व प्रकार के सुख मिलते हैं ।

औषधि यह है—

बीजबन्द १ तोला, पाषाणभेद १ तोला, बैमनसफेद १ तोला, बैमन सुर्ख १ तोला, तूदरी सफ़ेद १ तोला, तूदरी सुर्ख १ तोला, बबूल का गोंद १ तोला, केसर ४ माशे, चिये के बीज का छिल्का २ तोला, रांगे का कुश्ता २ तोला, इन सब को बारीक पीस छान, सब के बरावर मिश्री मिलाकर प्रतिदिन सुबह के समय १ तोला चूर्ण को ऽ॥ सेर गाय के दूध के साथ खावे परन्तु गर्म वस्तुओं अर्थात् खटाई, तेल और जो अपनी प्रकृति के अनुकूल न हों उन को न खावें, स्त्री प्रसङ्ग से बचना भी योग्य है, तदन्तर विषय के उत्पन्न करने वाली पुस्तकों, कहानियों और खेल तमाशों और वार्तालाप से बचना अभीष्ट है।

२—इलायची सुर्ख के दाने ६ माशे, इलायची सफेद के दाने ६ माशे, तगर ६ माशे, सोंठ ५ माशे, वंशलोचन १ तोला, सालिममिश्री २ तोला, सकाकुल २ तोला, मूसलीसफेद ४ तोला, सेंवर का मूसला १, केसर ६ माशे, चोबचीनी १ तोला, बादाम की मींग आधी छटांक इन सब को पीस कर उस के बराबर मिश्री मिलालें और २ तोले प्रतिदिन गाय के दूध के साथ ४० दिन तक खावें।

स्वप्न दोष के दूर करणार्थ—

गोंदनी के पक्के फलों को सुखाकर ३ माशे ले और बबूल का गोंद ६ माशे और कैंच के बीज ६ माशे इन सब को पीस उस के बराबर मिश्री मिलाकर दो तोले—आध सेर गाय के दूध में प्रतिदिन खायें। *

---

* विशेष हमारी बनाई घर का हकीम नामक पुस्तक में देखिये। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

* ओ३म् *

मु० चिम्मनलाल एण्ड संस

आर्यपुस्तकालय

तिलहर ज़िला शाहजहांपुर

की

पुस्तकों और औषधियों का
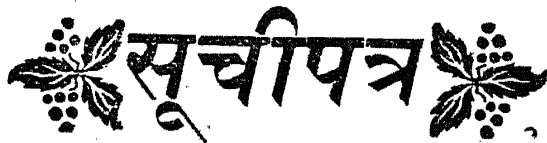
READ YOURSELF AND ASK YOUR FRIENDS.

A

CATALOGUE.

OF

BOOKS & MEDICIONS

BY

Chimman Lal & Sons.,

ARYA BOOKDEPOT

TILHAR (Dist. Shahjahanpur.)

INDIA.

To be had of Chimman Lall Bhadra Gnpta Tilhar Dist. Shahjahanpur,

INDIA.

आर्य्य पुस्तकालय एवँ औषधालय
के
नियम।

१—पुस्तकें वा औषधियां पेशगी मूल्य आने पर या वी०पी० पारसल द्वारा भेजी जाती हैं। गावों में भी बिना पेशगी रुपया आये माल नहीं भेजा जाता।

२—पैकिङ्ग वा डाक महसूल आदि का खर्च हर हालत में खरीदार के जुम्मे रहेगा।

३—१) से कम का माल वी०पी० नहीं भेजा जाता क्योंकि छोटी पुस्तक या थोड़ी औषधि मँगाने से ।।) डाक खर्च के ही लगते हैं इस लिये थोड़े माल के लिये टिकट भेजिये अथवा अधिक माल मँगाइये।

४—माल मँगाने वालों को अपना पूरा पता, नाम, ग्राम, डाकघर वा रेलवे स्टेशन का नाम वा ज़िला साफ़ साफ़ लिखना चाहिये।

५—बिकी हुई पुस्तक वा औषधि वापिस न की जावेंगी।

६—थोक माल १०) पेशगी आने पर भेजा जाता है।

७—थोक खरीदारों को कमीशन भी दिया जाता है।

यह बात भी सच है

कि

लम्बे चौड़े मिथ्या विज्ञापनों ने

आप के दिल को

हिला दिया है मन से इश्तहारों की प्रतिष्ठा जाती रही है परन्तु सच्चाई के प्रकाशित करने का भी तो यही एक ज़रिया है। यदि यह पुस्तकें आपके मन को आकर्षण करलें और पुत्र, पुत्रियों, नर नारियों के लिये उत्तम जचें तो इनका देश में प्रचार कीजिये वरन् इन पुस्तकों की हक़ीकत पबलिक पर प्रकाश कर अपने भाइयों के धन को बचाइये यही आपका परम धर्म है जब आप ऐसा करें तब ही तो मुल्क से झूठे इश्तहारों का खातमा होगा, और उत्तम लिटरेचर दृष्टिगोचर होने लगेंगे। परन्तु आप ऐसा नहीं करते--कहिये फिर क्योंकर उत्तम २ ग्रन्थ प्रकाशित हों यदि आप को देश सुधार जाति गौरव एवं साहित्य बृद्धि की इच्छा है तो कृपा करके, पुस्तकों की यथार्थ समालोचना करने में कभी त्रुटि न कीजिये।

गार्हस्थ्यधर्म

का

उत्तम, सस्ता, ग्रन्थ

इस ग्रन्थ का पहिला एडीशन सन् १८८५ ईस्वी में राजष्टड हो प्रकाशित हुआ। साहित्य प्रेमियों की गुण ग्राहकता से २८४०० प्रतियाँ निकल चुकी हैं अब विशेष संशोधन के साथ—

अठारहवां एडीशन

छप कर तैयार है। गृहस्थ सम्बन्धी समस्त उत्तम विषयों का समावेश इस पुस्तक में है ६५० पृष्ठ बड़े साइज़ के तथा उत्तम सफ़ेद काग़ज़ व उत्तम छपाई के होने पर भी मूल्य केवल २) डा० व्य० ॥=) आना।

नारायणी शिक्षा की बाबत

विदेशियों की सम्मति।

श्री० एन. निरञ्जनस्वामी फाइफ मेजर बूयशावर-

इसके पढ़ने से मेरी आत्मा को जितना आनन्द मिला वह किसी प्रकार नहीं लिख सकता, वास्तव में आपने गागर में सागर को भरने का यत्न किया है। योग्य गृहस्थ आपकी इस पुस्तक को पढ़, बिना धन्यवाद दिये नहीं रह सकता।
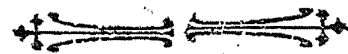
श्री० पं० त्रिदेशीलाल जी शर्मा-दर्बन

(नेटाल अफ्रीका)

जिस तरह धातु में सुवर्ण, वृक्षों में आम, रसों में मिश्री, दुग्ध में घृत, मीठे में शहद, जीवों में मनुष्य, पुष्टियों में ब्रह्मचर्य, प्रकाश में सूर्य श्रेष्ठ है वैसे ही आप की पुस्तक "नारायणी शिक्षा" सम्पूर्ण स्त्रियों के लिये उपयोगी है। मैं आशा करता हूँ कि विचारशील पुरुष अवश्य इस अमूल्य पुस्तक से लाभ उठा कुटुम्बियों सहित आनन्द भोगने की चेष्टा करेंगे

इसी प्रकार और भी प्रशंसा-पत्र आये हैं पर स्थानाभाव से प्रकाशित नहीं कर सकते।

भारत के गण्य मान्य सज्जन क्या कहते हैं--

श्रीमान् पं० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी, सम्पादक सरस्वती प्रयाग

सरस्वती भाग १० सँख्या ७ में प्रकाशित करते हैं कि "नारायणी शिक्षा-सम्पादक बाबू चिम्मनलाल वैश्य पृष्ठ सँख्या ६१२। सांचा बड़ा, कागज़ अच्छा, छपाई बम्बई के टाइप की" इस इतनी सस्ती और उपयोगी पुस्तक का दूसरा नाम गृहस्थाश्रम शिक्षा है। पुस्तक कोई ३० भागों में विभक्त है। गृहस्थाश्रम से सम्बन्ध रखने वाली, शिशुपालन, शरीर रक्षा, ब्रह्मचर्य, विवाह, पति पत्नी धर्म, नित्यकर्म्मादि कितनी ही बातों का इस में वर्णन और विचार है। श्रुति, स्मृति, उपनिषद्, पुराणादि से जगह २ पर विषयोपयोगी प्रमाण उद्धृत किये गये हैं। पुस्तक में सैकड़ों बातें ऐसी हैं जिनका जानना गृहस्थ के लिये बहुत ज़रूरी है।

श्रीमान् पं० विष्णुलाल जी साहब शर्मा सबजज-

MY DEAR MUNSHI CHIMMAN LALL JI,

The **Narayani Siksha** is a library in itself being a work of Cyclopedia information. No subject Theoretical or Practical which is useful to a house holder has been left untouched. The style is simple, yet impressive. I am not aware of a better book for females in Hindi, and am of opinion that no Hindu family should be without a copy of your book.

श्रीमान् बाबू रामनारायण साहब तिवारी—

Dear Sir,

I have read the Narayani Siksha or Grihast Ashram compiled by you. I do not know of any other book in Hindi which gives in such a short compass everything that a Grihatha or house-holder shohld know besides. I find your book a valuable additeruinn to the literature for Hindu women. It is a pleasure to see that the book is so cheap a lesson that other authors on popular subjects might well learn from you. I think a book on Vedic principles should be as cheap as possible and no one will, I am sure grumble to spend one repee and eight annas more for the large and useful matters contained in your book.

महाशय हरगोपाल जी देहली

नारायणी शिक्षा बहुत ही उत्तम पुस्तक है।

—:o:—

श्री सम्पादक भ्रमर-बरेली

ग्रन्थ में विशेषता यह है कि प्रत्येक बात की पुष्टि में वेद और शास्त्रों के प्रमाण दिये गये हैं। स्वास्थ्य,

विद्या, विवाह, रोग चिकित्सा, शिशुपालन, और पाक विद्या आदि स्त्री सम्बन्धी समस्त आवश्यक विषयों की विस्तृत व्याख्या की गई है। स्थान २ पर प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास से प्रासाँगिक उदाहरण भी संकलित किये गये हैं, गृहस्थी भाइयों को यह पुस्तक अवश्य संग्रह करनी चाहिये।

देशबन्धुराय मुलतान

नारायणी शिक्षा बहुत ही उपयोगी पुस्तक है।

म० बच्चीराम जी दीघाट

नारायणी शिक्षा सामाजिक तथा धार्मिक उन्नति के लिये एक दिव्य सोपान रूप है। भाषा सरल और सराहनीय है।

श्री बा० कृष्णप्रसाद जी तहसीलदार
कैसरगंज

नारायणी बहुत ही उपयोगी पुस्तक है।

म० भोजराज जी फीरोजपुर

नारायणी शिक्षा प्रत्येक जन को उपयोगी है।

स्वर्गीय श्रीब्रह्मचारी नित्यानन्दजी सरस्वती

मैंने आपकी बनाई हुई पुस्तकों को अच्छे प्रकार से देखा ये सब किताबें पबलिक की शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति करनेवाली हैं। विशेष खूबी यह है कि प्रत्येक विषय के साबित करने के लिये वेद, स्मृति, पुराण इत्यादि के प्रमाण अच्छे प्रकार से दिये हैं, जिनके कारण इन पुस्तकों के पढ़ने वाले पूर्ण लाभ उठाते हैं। दौरे में मुझ से आपकी पुस्तकों की अनेकान पुरुषों ने प्रशंसा की, वास्तव में वह प्रशंसा ठीक है, क्योंकि आपने इनके लिखने में बड़ा परिश्रम किया है। इसलिये मेरा चित्त आपसे बहुत प्रसन्न है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि आप अपने जीवन भर इस उपयोगी कार्य्य को सदा करते रहें जिससे देश में वैदिक ख्यालात की उन्नति होकर सब प्रकार आनन्द हो।

बा० नन्दलालसिंह जी बी. ए., बी. एस. सी. एल. एल. बी.

तिलहर के······जी ने यह पुस्तक लिखकर स्त्री जाति का बड़ा उपकार किया है। हम मु० जी को इस सफलता के लिये बधाई देते हैं। इस में प्रायः उन सब बातों का समावेश है जो बालिका, युवति और वृद्धा तीनों के लिये विशेष उपयोगी हैं। यदि इस शिक्षा को स्त्री–उपयोगी बातों का विश्वकोष (Cyclopedia) कहें तो उचित है। प्रत्येक को अवश्य रखनी चाहिये।

सम्पादक, इन्दु मासिक पत्र, बनारस—

इसमें गृहस्थाश्रम के प्रायः सभी ज्ञातव्य विषयों पर विशद रूप से निबन्ध लिखे गये हैं, हम निःसंकोच कहते हैं कि यह निबंध विद्वता के साथ लिखे गये हैं।
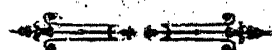
श्री महाराजा महेन्द्रपालसिंह जू देव बहादुर छुरी बिलासपुर—

बेशक आपने इस पुस्तक से सम्पूर्ण गृहस्थियों का बड़ा उपकार किया है।
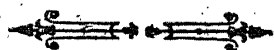
स्वर्गीय श्री पं० तुलसीराम वेदभाष्यकार, मेरठ—

मुं०..........जी कृत यह ग्रन्थ प्रसिद्ध है, स्त्री वर्ग के उपयोगी में इस से उपकारक पुस्तक कोई ही होंगे। ऐसी उपयोगी पुस्तक होने पर मूल्य बहुत कम है। एक २ प्रति प्रत्येक गृहस्थ को देखने योग्य है।

बाबू मोरूतामिल जी हेडमास्टर, आर्य्य स्कूल, होशियारपुर।

मेरी स्त्री ने आरम्भ से लेकर आखीर तक भली भांति पढ़ा और मैंने भी कहीं २ देखा, सचमुच स्त्री और पुरुषों के लिये बड़ी लाभदायक है, मैंने और मेरी धर्मपत्नी ने स्त्री-शिक्षा की अनेक पुस्तकों को पढ़ा है परन्तु ऐसी उत्तम और लाभदायक किसी पुस्तक को नहीं पाया। आपने यथार्थ में आर्य्य-जाति पर महान् उपकार किया है जो ऐसी उत्तम और

धार्मिक आकर्षक और चित्त पर प्रभाव डालने वाली पुस्तक निर्माण की, तिस पर लुत्फ़ यह है कि मूल्य भी बड़ा ही स्वल्प रखा है यह और भी सुगन्ध है। कृपा कर अपनी लेखनी को ऐसे ही कार्य्यों में लगा यश के पात्र बनते रहिये।

श्रीयुत गोविन्द जी मिश्र ६५।३ बड़ा बाजार, कलकत्ता।

आपकी पुस्तक को पढ़कर मेरी आत्मा को जितना आनन्द मिला है, वह किसी प्रकार से लिखकर नहीं बता सकता। वास्तव में आपने सागर को गागर में भरने का साहस किया है। गृहस्थाश्रम के आवश्यकीय प्रायः समस्त विषयों का संग्रह किसी पुस्तक में सिवाय नारायणीशिक्षा के नहीं देखा। इस एक ही पुस्तक से मनुष्य अपना प्रयोजन पूर्ण रूप से गठन कर सकता है। ऐसी ऐसी पुस्तकों की रचना प्रायः उस कक्षा की धार्मिक आत्माओं के द्वारा ही हुआ करती है।

श्री प्रतापनारायण सिंह जी, ग़ाज़ीपुर—

यह एक अति उत्तम पुस्तक है और प्रत्येक घरों में रहने लायक़ है। मेरा ऐसा विचार है कि हमारे भारतवासी स्त्री-पुरुषों के लिये जो कि इसको एक बार भी पढ़ लेंगे तो अति लाभदायक और उपयोगी होगी। मैं आपके इस परिश्रम और आपके उस अमूल्य समय के व्यतीत करने के लिये जो आपने हम भारतवासियों के लिये लाभार्थ उठाया है, शुद्ध-चित्त से प्रशंसा करता हूं।

इसके अतिरिक्त श्रीमान् राजा फतेहसिंह साहब बहादुर पुवायां, श्री पण्डित शीतलप्रसादजी डिप्टीकलेक्टर, म० रामचरण जी साहिब हॉस्पिटल असिस्टेन्ट सर्जन सरधना, बाबू कृपालसिंह जी डिप्टी इन्सपेक्टर इन्दौर, बाबू बलदेवप्रसाद वकील व प्रधान कायस्थ कान्फ्रेंस, बाबू मथुराप्रसाद साहिब सब इंजिनियर सीतापुर, बाबू जगदीश नारायण जी गहलोत हाउस जोधपुर, श्रीझारावरदारवीर शर्मा जोधपुर, पं० देवदत्त जी शर्मा आमघाट गाजीपुर, श्रीरामदयालुजी शाहपुरा, श्री० विद्याधर जी गुप्त राजा का रामपुर, श्रीराजेन्द्रनाथजी स्कूल फ़ीरोज़बाद, बाबू शालिग्राम सुपर्वाईज़र दफ़्तर मर्दुम शुमारी मिर्ज़ापुर, श्रीयुत गंगाप्रसाद जगन्नाथ जी हल्द्वानी, श्रीयुत शम्भुनारायण जी शर्मा झरिया मानभूमि, बा० उदय नारायण बलदेवप्रसाद जी मैथिल दानसाहू प्रान्त इटावा, श्रीयुत मास्टर शिवप्रसाद जी वर्मा मुरादाबाद, मुंशीलाल माझी छपरा, बाबू मोहनसिंह जी सागूसिंह जी देहरादून, श्रीमहाशय वीरवर्मा स्वामी यन्त्रालय देहरादून, श्री कालिका प्रसाद जी कनाईघाट (सिलहट), श्रीयुत नत्थूरामजी आचार्य तलवारा (होशियारपुर), श्रीयुत लाला रामप्रसाद जी बड़ा बाज़ार भरतपुर, श्रीयुत मंगलदेव जी शर्मा कोटला (आगरा) एवं सम्पादक श्रीमहात्मा मुंशीराम जी 'सद्धर्मप्रचारक', म० एडीटर आर्यावर्त्त दानापुर, म० सम्पादक गौधर्मप्रकाश, म० सम्पादक भारतसुदशाप्रवर्त्तक आदि अनेक सभ्य पुरुषों के प्रशंसायुक्त पत्र आ चुके हैं।
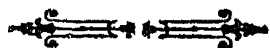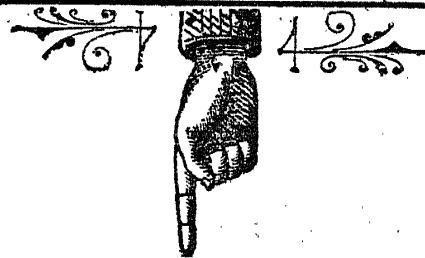
पुस्तक की उत्तमता जानने के लिये समालोचनायें पढ़िये

पुत्री उपदेश की बाबत लोगों की सम्मतियां।

श्री० बा० कन्नोमल जी जज धौलपुर

पुत्री उपदेश नामक पुस्तक कन्याओं के लिये परमोपयोगी है बालिकाओं के जानने और मनोधारण योग्य जितनी बातें हैं उन सभी का समावेश इस पुस्तक में है कथा और कहानियां बड़ी रोचक और शिक्षाप्रद हैं पुस्तक सरल सुबोध और शुद्ध हिन्दी में लिखी हुई है सभी कन्या पाठशालाओं में इसका प्रवेश होना चाहिये। लड़कियों को पारितोषिक देने के लिये तो यह एक ही पुस्तक है।

———:o:———

श्री रायसाहब मदन मोहन सेठ एम. ए. एल. एल. बी. M.R.A.S. मेम्बर इलाहाबाद। यूनीवर्सिटी कोर्ट गोरखपुर

आपकी पुत्री उपदेश नामक पुस्तक को मैंने बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा। हिन्दी साहित्य में यह एक नवीन मार्ग की पथ प्रदर्शक है। आज कल की साधारणतया मिलने वाली पुस्तकों के समान शुष्क तथा निरर्थक नहीं है किन्तु यह एक सजीव तथा उत्तम शिक्षाओं का संग्रह है।

———*———

श्री० बाबू श्यामसुन्दरलाल जी वकील मैनपुरी।

यह ग्रन्थ मुंशी जी की अन्य पुस्तकों से मुझे बड़ा उत्तम प्रतीत हुआ क्योंकि इसमें मानव समाज में स्त्रियों का स्थान

जीवन की सार्थकता, पतिव्रत धर्म, कुटुम्ब व्यवहार, सच्चा बड़प्पन, देशोन्नति, राजधर्म, प्रजाधर्म, साधारणधर्म, आदि बातों का उपदेश ऐसे मीठे तथा सरस शब्दों में वर्णन किया गया है कि हृदय को उनमें सहसा पढ़ते २ अनुराग उत्पन्न हो जाता है। शिक्षाप्रद कहानियों का भी उल्लेख है सर्वतो दृष्टि से यह ग्रन्थ ऐसा उपयोगी है कि प्रत्येक सद्ग्रहस्थ को यह पुस्तक अपने यहां रखनी चाहिये। छपाई, कागज़ उत्तम मूल्य भी बहुत कम है।

भारत के प्रसिद्ध उपदेशक स्वर्गीय पं० हरिशंकर व्यास मुरार

गृहस्थाश्रम के दूसरे भाग को मैंने आद्योपान्त पढ़ा सुन्दर लेख शक्ति, उच्च भाव, मनोहर वाक्य रचना बतला रही है कि लेखक का जीवन पवित्र है यदि प्रत्येक गृह में इस पुस्तक का नियम पूर्वक स्वाध्याय हो तो निःसन्देह पुत्र पुत्रियों का जीवन आदर्श बन सकता है इस लिये मैं ज़ोर के साथ प्रत्येक गृहस्थ से प्रार्थना करता हूं कि इस उपयोगी पुस्तक को मंगा कर अपने गृहों की शोभा को बढ़ावें।

उपमंत्री आ० प्र० नि० सभा संयुक्त प्रान्त।

वास्तव में यह पुस्तक स्त्रियों और कन्याओं के लिये अत्यन्त शिक्षा पूर्ण है उनके लिये जिन २ बातों का जानना ज़रूरी है वे सब बातें इस पुस्तक में अच्छे प्रकार वर्णन की गई हैं लेखक महाशय का उद्योग सराहनीय है।

श्री० पं० महेशीलालजी डिप्टी इन्सपेक्टर बदायूं

पुस्तक क्या है मानों फूलों का रस है, या यों कहिये कि गड़े हुए ख़ज़ानों को आपने खोद कर निकाला है।

श्री० ठा० गिरवरसिंहजी सब डिप्टी इन्सपेक्टर

यह पुस्तक मनुष्य मात्र के जीवन का पथ प्रदर्शक और सुधारक है इसके पाठ से वह अपने जीवन को अनुभवी बना सकता है। स्त्री शिक्षा के लिये यह अनुपम पुस्तक है इसके सब विषय उपयोगी और मनोरञ्जक हैं वास्तव में यह बड़ी योग्यता से लिखी गई है।

बा० रामनारायण जी प्रधान आ० स० बाराबंकी

पुत्री उपदेश योग्यता पूर्वक लिखी गई है विषय उपयोगी मनोरञ्जक और शिक्षा पूर्ण है स्त्री शिक्षा के लिये यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

सम्पादक 'प्रतिभा' मुरादाबाद

गृहस्थाश्रम जिन बातों से सुखद होता है इस पुस्तक में प्रायः उन सब बातों का थोड़ा बहुत वर्णन है ...ब्रह्मचर्य की महिमा तथा हृदय की पवित्रता और व्यवहार शुद्धि पर भी लेखक ने अपने ढङ्ग पर खूब लिखा है देश की बहुत सी बातों का दूसरे देशों से मिलान करके अपनी हीनता दिखलाई है जिसे पढ़कर अपनी अवस्था का बहुत कुछ ज्ञान हो जाता है ऐसे अनेक काम के विषयों की इस दूसरे भाग (पुत्री

उपदेश) में चर्चा है पुस्तक लेखक आर्य समाजी विचार के पुरुष हैं पर उनकी इस पुस्तक से सब विचार की स्त्रियां और पुरुष भी लाभ उठा सकते हैं।
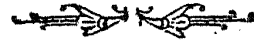
श्री संपादिका स्त्री दर्पण प्रयाग।

इस पुस्तक में लेखक ने अपनी पुत्री को उपदेश दिये हैं परन्तु वे सभी पुत्रियों तथा उनकी माताओं को भी पढ़ने योग्य हैं। सभी संसारिक बातों का निर्णय इन उपदेशों में है.........पुस्तक अपने ढङ्ग की अच्छी है।

मूल्य केवल २)

पु॰ त॰ प्र॰ क्या है ?

यह ५०० पृष्ठ की पुस्तक सनातनधर्म सभा के माननीय अठारहपुराणोंकी आलोचनाहै जिसके पाठ मात्र से पुराणों का रहस्य खुल जाता है, उसके भीतरी तिलस्मातों का भयानक दृश्य स्पष्ट दृष्टि आने लगता है। इसके लिखने का ढंग इतना प्रिय और रोचक है कि यदि एक बार हाथ में ली तो बिना समाप्त किये आप कभी न छोड़ेंगे। स्त्रियों और पुत्रियों के यह बड़े काम की है क्योंकि स्त्रियां ही पुराणों के लेखों पर मोहित हो

कर–तन, मन, धन, न्यौछावर कर पुरुषों को भी वैदिक सिद्धान्तों से गिरा देती हैं, अतएव युवतियों तथा बहिनों को अवश्य पाठ कराइये जिससे उनका हृदय ज्ञान से पूरित हो जावे। इस के अतिरिक्त इसमें बड़ा मज़ा यह है कि आप इस अमूल्य पुस्तक को बग़ल में दबा सनातनी भाइयों एवं पंडितों से धड़ाधड़ शंका समाधान कर अपने चित्तको शान्त कीजिये इसमें मालूमात का ख़ज़ाना बहुत है, इसलिये हमारे सनातनी भाइयों के लिये भी यह बड़ी उपयोगी है क्योंकि जिन्होंने अठारह पुराणों के कभी दर्शन नहीं किये उनको इससे सनातन महिमा का यथार्थ ज्ञान होता है इस लिये प्रत्येक मनुष्य को पाठ कर सत्यासत्य का विचार करना चाहिये कि क्या अठारह पुराण महर्षि व्यास के बनाये हुए हैं? किताब क्या है पुराणों का पूरा ख़ाका इसके अन्दर है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देवी महारानी की करतूत, तामस पुराणों की रचना, ब्रह्मा, विष्णु, शिव का स्त्री होना, विष्णु के कानके मैल से मधुकैटभ का उत्पन्न होना, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, वशिष्ठ, विश्वामित्र, बृहस्पति तथा शुक्र को अपार लीला, त्रिदेव के अनोखे कर्तव्यों का फोटो, कलि महात्म्य और उस के दूर होने का सरल उपाय गंगा महारानी की विचित्र उत्पत्ति गंगामहारानी का स्वपाप मोचन करना, राजा बेन के मरने पर उसकी भुजाओं से निषाद और पृथु का उत्पन्न होना, वृक्षों से मरीषा का जन्म, रेवती के छोटे करने की अजीब तरकीब, राजा निमि से पुत्र का उत्पन्न होना, बलदेव जी का मदिरापान कर यमुना जी को खींचना; बल के शरीर से सोना चांदी आदि का उत्पन्न होना राजा सगर की रानी के साठ हज़ार पुत्रों का उत्पन्न होना,

देवताओं से वृक्षों, ब्रह्मा जी के कान से दिशाओं की उत्पत्ति राजा का हिरणी के साथ वार्तालाप, मनु की पुत्री का पुत्र हो जाना, कचका टुकड़े कर राक्षसों का खाना फिर उसे जीवित निकालना, हरिणी के पेट से शृंगी ऋषि का, राजा की कोख से पुत्र का जन्म; जन्तु नाम पुत्र की चर्बी से हवन कर उस से रानी के पुत्र का होना इत्यादि बातों के उपरान्त गणेश महाराज की अद्भुत उत्पत्ति और मृतकश्राद्ध आदि आदि का बड़ी खूबी से वर्णन है, प्यारे पाठको! एक बार अवश्य ही इसका पाठ कर अक्षय सुख का अनुभव कीजिये।

सुनिये इसकी बाबत लोग क्या कहते हैं।

सर्दारनी सदाकौर रसूलपुर जि० बहरायच

पुराणतत्त्वप्रकाश बहुत उत्तम तरीके में लिखी गई है। १८ पुराणों का निचोड़ इस में लिख दिया है। चूंकि लोगों को पौराणिक भाइयों से बहुत वास्ता पड़ता है इसलिये सर्व साधारण वा आर्य भाइयों को एक एक पुस्तक अवश्य ही अपने पास रखनी चाहिये।
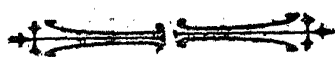
श्री० पं० पद्मसिंह जी साहब सम्पादक।

भारतोदय महाविद्यालय ज्वालापुर यू० पी०

इस पुस्तक में श्रीमद्भागवत, देवीभागवत, पद्म, विष्णु, लिङ्ग, अग्नि, कूर्म, वाराह, ब्रह्मवैवर्त्त, वामनादि पुराणों से

सभ्यता पूर्वक यह दर्शाया है कि १८ पुराण महर्षि व्यासप्रणीत नहीं हैं। इस पुस्तक में आर्य सामाजिक दुनियां के ग्रन्थकारों में प्रसिद्ध मु० चिम्मनलाल जी वैश्य ने बड़े परिश्रम से काम लिया है, खूब छानबीन के साथ पुराणों से प्रमाण इकट्ठा कर कर अपने मत की पुष्टि की है। लम्बी २ कथाओं का सार हिन्दी भाषा में लिख कर मूल प्रमाण भी यत्र तत्र उद्धृत किये हैं। पुस्तक का क्रम और लिखने का ढंग अच्छा है। पुस्तक पढ़ने में जी लगता है। यह पुराणों के अनुयायी और विरोधी दोनों के देखने योग्य और काम की है।

श्री पं० बाबूराम जी एडीटर (सुधांशु)

श्री० मुन्शी…जी वैश्य एक पुराने आर्यभद्र पुरुष हैं। आपने नारायणी शिक्षा आदि लाभकारी पुस्तकें लिखकर आर्य धर्मप्रचारार्थ बड़ी सहायता दी है और साहित्य पर बड़ा उपकार किया है। हाल में ही आपने पु० त० प्र० नामक एक नूतन पुस्तक तैयार की है। हमने इसको आदि से अंत तक पढ़ा है, इस लिये हम दावे के साथ कह सकते हैं कि यह अठारह पुराणों का तत्वप्रकाश करने में अनुपम और अद्भुत प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में प्रश्नोत्तर की रीति पर पुराणों का विषय बड़े विस्तार के साथ वर्णन है और साथही साथ उनकी असारता का खण्डन बड़ी योग्यता के साथ लिखा है। हमारी सम्मति में एक २ प्रति आर्य गृह में अवश्य रहनी चाहिये।
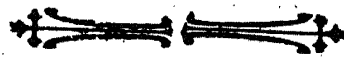
उपन्यास स्वरूप में स्त्री-शिक्षा की अनूठी पुस्तक

नारिभूषण अर्थात् प्रेमधारा

जिसकी प्रशंसा में अनेकान पत्र सुयोग्य स्त्री पुरुषों के आ चुके हैं।

जो दूसरी बार छप कर आई है ।

प्रिय पाठक पाठिकाओ ! यह किताब क्या है मानो शिक्षा की कुञ्जी, प्रेम की पुड़िया, अपने ढंग की निराली और अजीब है, भाषा इसकी सरल रोचक है उपन्यासी ढंग पर लिखी गई है। अपनी सुन्दरता में तो अनूठी ही है ! यदि आप अपनी सन्तानों को धनवान, बुद्धिवान, धर्मात्मा, सुशील, सदाचारी, आज्ञाकारी आदि गुणों से विभूषित करना चाहते हैं तो एक बार "प्रेमधारा" का अवश्य पाठ कराइये। देखिये प्रियंवदा देवी ने किस सरल रीति से कटुभाषिणी यशोदा और उसके पुत्र बहुओं को समझाया है, कैसी २ उत्तम कहानियां सुनाई हैं। जिनके सुनते ही सास बहुओं का वैमनस्य दूर हो प्रेम का अंकुर उनके हृदयों में जम गया जिसके कारण सम्पूर्ण गृह स्वर्ग के सदृश प्रतीत होने लगा। तदुपरांत सुयोग्य प्रियंवदा गृहस्थाश्रम की आवश्यकीय बातों को बता कर देश देशान्तरों के वृतान्त सुना एक विवाह पर नगर की मूर्ख स्त्रियों के आपेक्षों का उत्तम रीति से समाधान कर कुरीतियों का संशोधन किया है। प्रिय सज्जन पुरुषो ! यह पुस्तक क्या है मानों पुत्र पुत्रियों का पथ-दर्शक है। यदि आप अपनी स्त्रियों के हृदयस्थल में ऐक्यता आदि सद्गुणों का बीज बोना चाहते हैं। तो अवश्य एक बार वी० पी० से मंगा स्वयं पढ़ एक एक प्रति प्रत्येक गृहों में पहुंचा दीजिये। २०० पृष्ठ होने पर भी आप सबके सुभीते के लिये ॥।) मात्र है।

आदर्श जीवनों के पाठ ही आदर्श जीवन बनाते हैं।

नीचे लिखे जीवनों में श्रेष्ठ जीवन
बनाने के लिये पर्याप्त सामिग्री
उपस्थित है

 देखिये--

१-श्री १०८ स्वामीदयानन्द सरस्वती
का पूर्ण जीवन मूल्य १॥)
तीन चित्रों सहित

युधिष्ठिर ।) अर्जुन ≡)
भीमसेन ≡) विदुर ≡)
धृतराष्ट्र ≡) द्रोणाचार्य ≡)
दुर्योधन ≡)॥
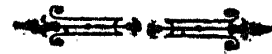
दशरथ -)॥ राम =)
लक्ष्मण -) भरत-)
महारानी मंदालसा ।)॥

वीर्य रक्षा

अन्य उपयोगी पुस्तकें

प्रत्येक गृहस्थ को स्वाध्याय करने योग्य

वैद्यक की उपयोगी पुस्तकें

इस पुस्तक में शरीर किन पदार्थों से बना है पंच महाभूत किसको कहते हैं। वायु और उसके भेद, श्वांस, पसीना, तेज, जल, और शरीर की गतियां तथा मस्तक, आंख, नाक, कान मुंह, दान्त, मसूढ़े, तालु, गाल, कनपटी, ठोड़ी, गर्दन, धड़, हंसली, शिरा, धमनी, स्नायु, पेशी, कन्डरा, फुफ्फुस, हृदय, फेफड़ा, अन्तड़ियां, सिवनी, मर्मस्थान, तिल्ली और जिगर क्या है ? भोजन कैसे और कहां पचता है ? इस प्रकार की लगभग १०० बातों का वर्णन सरल भाषा में किया गया है साथ ही उन नियमों को भी बतलाया गया है जिन पर चलने से शरीर आरोग्य रह सकता है बिना शरीर की बनावट के ज्ञान के उसका निरोग रखना कठिन है पूर्ण सुख धन और ऐश्वर्य शरीर को स्वस्थ रखने से ही मिलते हैं इस लिये यदि आप कुटुम्ब सहित सुखी रहना चाहते हो। तो सचित्र एवं अनुपम इस पुस्तक का पाठ कर उसके ज्ञान से बालकों और स्त्रियों को भी अलंकृत कीजिये। मूल्य केवल ॥)

* ओ३म् *

युवतीरोगचिकित्सा

लगभग दस वर्ष से मैंने औषधालय खोला है पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को बहुत रोगों से दुःखित पाया, सैकड़ों भारतमाता की पुत्रियां सन्तान न होने के कारण विकल हो असमय संसार से विदा हो रही हैं अतः उन के दुःख दूर करने और उनकी गोद को सन्तान रूपी रत्न से अलंकृत करने के लिये हमने कई वर्ष के नितान्त परिश्रम एवं अनुभव से इस पुस्तक को तैयार कर मोटे सफेद कागज़ पर उत्तम अक्षरोंमें छपवाया है इस में रज क्या है ? शुद्ध रज की पहिचान बांझ स्त्री पुरुष की परीक्षा आठ प्रकार की बन्ध्याओं का वर्णन, बन्ध्या रोग निवारण, मासिक धर्म ठीक होने के नुसखे योनि के समस्त रोगों का इलाज धरन और प्रदर रोगों की चिकित्सा मृतवत्सा (सन्तान होकर नष्ट हो जाना) की चिकित्सा गर्भ धारण की औषधियां गर्भिणी के रोगों की चिकित्सा-प्रसव के बाद रोगों का इलाज पेट के नलों और दूध की चिकित्सा तथा स्त्रियों के प्रबल रोग हिष्ट्रिया आदि १०५ रोगों की चिकित्सा का वर्णन सरल सरल अनुभूत नुसखों द्वारा किया गया है आशा है मातायें और बहिनें इस पुस्तक का पाठकर दुःखों से छुटकारा पा हमारे परिश्रम को सफल करेंगी। मूल्य केवल लागत मात्र ।=)

जिनघरों में सुन्दर-बल वान औरनिरोगसन्तानें विद्यमानहैं वेही भाग्य-शाली परिवार कहातेहैं परन्तु वर्त्तमान समय में विरले ही कुटुम्बी होंगे जिन को यह अपूर्व सुख प्राप्त हो क्योंकि बालकों की उत्पत्ति वृद्धि और रक्षा का भार मुख्यतया माताओं के आधीन होता है और भारत की मातायें अज्ञान एवं अविद्या के कारण न गर्भाधान की रीति का ही जानती हैं न बाल रक्षा की क्रिया को जिससे कुलवती माताओं की गोद पुत्र रत्न से शून्य ही दिखाई देती है और बिलखती हुई माताओं का हृदय द्रावक वृतान्त यह लेखनी नहीं लिख सकती। उसी दुःख से दुःखी हो आज मैं आप के सम्मुख यह बालरोग चिकित्सा नामक पुस्तक प्रस्तुत करता हूं आशा है इसकी दवाइयों को यथा समय हमारी मातायें और बहिनें आज़माकर अपने प्यारे पुत्रों का लालन पालन करेंगी इस पुस्तक में बालरोग परीक्षा, बालक का वजन वा आकार, नाल काटने में सावधानी, उनका नहलाना, सुलाना आदि शिशुचर्या औषधि देने के नियम, दूध पिलाने का समय, धाय रखने में सावधानी, दूध शुद्धि के उपाय अनेक जन्म घुटियां, ज्वर, खांसी, दस्त बन्द करने को, दस्त कराने को, हिचकी, स्वर भेद, गले की घरघराहट, सन्निपात होने, हंसली उतर जाने, मुंहा, तालु आ जाने, गला आजाने, पेट फूलना, पेट का दर्द, उल्टी, प्यास, दांतों की तकलीफ, आंख दुःखना, कानके रोग, सिर के रोग, नाभि रोग, लू लगना, नाक से खून गिरना, खुजली, अंधौरी फुड़िया, छारुए, कांच निकलना, भगन्दर चिनग, बालामृत, प्रलीघृत, धनुष्टंकार, डब्बा, अभिष्यन्द, पारिगर्भिक, ग्रह पीड़ा, पसुली, जमोघा, सूखा, शीतला, मृगी आदि रोगों की चिकित्सा सरल अनुभूत प्रयोग द्वारा लिखी गई है पुस्तक सफेद कागज पर मोटे अक्षरों में छपाई गई है। मूल्य केवल।=)

वैद्य हस्त भूषण
अर्थात्
घर का हकीम

भारतवर्ष में आज कल रोगों की जितनी भरमार है उस को आप सभी जानते हैं उस पर भी शहर-नगरों एवं विशेष कर ग्रामों में उत्तम वैद्यों के न मिलनेसे भारत जननी की अनेक आत्मायें अनेक रोगोंमें फंसकर दुःख उठारहीहैं और कुसमय में काल की ग्रास बनजाती हैं इस दुःखको दूर करने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है वास्तव में यह एक ही पुस्तक गृहस्थमात्र के लिये विशेष उपयोगी है क्याकि इसमें सिर दर्द-नजला, जुखाम, सरसाम, मृगी, सकता, नींद का ज़ियादा आना, नींद का कम आना, उठते बैठते आंखों के नीचे अन्धेरा आना, आधा सीसी, आंख का दर्द, सूजन, छड़ पड़ आना आदि आंख के सम्पूर्ण रोग, नाक के सम्पूर्ण रोग, कान के सम्पूर्ण रोग, मुख के हलक के, दांत, हृदय के सब रोगों तथा दमा, खांसी, सिल, दिक, सब प्रकार के ज्वर, दस्त आदि पेट के सब रोग प्रमेह, सूजाक, मूत्रकृच्छ्र, बवासीर, गठिया आदि बात के रोग अर्थात् शरीर में होने वाले समस्त रोगों की चिकित्सा अनेक बार के आजमाये हुए अनेकों अनुभूत प्रयोगों द्वारा लिखी गई है प्रत्येक नुसखे के बनाने की विधि दवाइयों के नाम तोल सरल भाषा में लिखी गई है। वर्तमान काल में अनुभूत प्रयोगों की कितनी ही पुस्तकें छप चुकी हैं परन्तु साधारण गृहस्थी उनकी दवाइयों के नाम तोल संस्कृत में होने के कारण कोई भी प्रयोग ठीक नहीं बना सकते अतः पाठकों की यह कठिनाइयां दूर करदी हैं एक बार मंगाकर पढ़िये फिर आप को बाहर से हकीम डाक्टरों के बुलाने का ही झंझट न करना पड़ेगा। मूल्य केवल १) डा० व्य० ।≡)

ॐ

वैद्यक की पुस्तकों

पर

कुछ सम्मतियां

श्री यमुनाप्रसाद जी लखनऊ

युवती रोग चिकित्सा—पढ़ कर हृदय को बड़ा ही आनन्द प्राप्त हुआ। यदि ऐसी पुस्तकें भारत की प्रत्येक देवी के हाथों में हों तो बड़ा ही लाभ हो।

श्री० म० जगन्नाथ प्रसाद जी वैद्य मुंगेर

मैंने आप की वैद्यक की समस्त पुस्तकों को आद्योपान्त पढ़ा ये पुस्तकें पबलिक की उन्नति करने वाली हैं। प्रत्येक रोग के कई २ प्रकार के नुसखे लिखे हैं। नुसखों की औषधियां सब जगह मिल सकती हैं प्रत्येक रोग में पथ्यापथ्य क्या होना चाहिये इसका भी वर्णन कर आपने पुस्तक को और भी उपदेश बना दिया है। मूल्य भी थोड़ा है।

मैनेजर शान्तिनिकेतन जैन औषधालय सागर

आपने वैद्यक की पुस्तकें लिखकर बड़ा उपकार किया हैं वास्तव में ये पुस्तकें वैद्यों और गृहस्थियों के बड़े काम की हैं।

श्री सम्पादक आर्य मित्र आगराः—

वैद्यक की पुस्तकें अत्यन्त उपयोगी हैं। इसी प्रकार श्री बा० किशनचन्द जी एम० ए० प्रिन्सिपल इंटरमीजिएट कालिज मुरादाबाद, श्री बा० मक्खनलाल जी सालमेन्ट आफीसर चरखारीस्टेट। श्री० पं० शंकरदेव जी पाठक काव्य तीर्थ प्रोफेसर गुरुकुल वृन्दावन। श्री० पं० भद्रदत्त जी शर्मा शास्त्री गुरुकुल वृन्दावन। श्री सेठ शिवलाल जी झांसी। श्री० लाला शिवसहायमल फतेहचन्द दिनोद। आदि २ महानुभावों के प्रशंसा पत्र आये हैं।

ला० गिरिधारीलाल कंसल के प्रबन्ध से—
साहित्य मुद्रणालय मेरठ में मुद्रित ।